वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हिन्दू विश्व

सितम्बर 16-30, 2025

भारतीय संस्कृति की आत्मा है
कुटुम्ब व्यवस्था

हल्द्वानी (उत्तराखण्ड) में मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्ति एवं अवैध धर्मांतरण पर तत्काल रोक लगाने की माँग को लेकर प्रेस वार्ता को संबोधित करते विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी

ग्वालियर (म.प्र.) में बजरंग दल की राष्ट्रीय बैठक के अवसर पर उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे, ब.दल के रा. संयोजक श्री नीरज दौनेरिया तथा बजरंग दल के अनेक प्रांत के प्रांत संयोजक

अग्रसेन भवन, बिरता मोड़, नेपाल में परिवार सम्मेलन तथा प्रबोधन कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

नेताजी एकेडमी, उच्च विद्यालय होचर, काँके (झार.) में विहिप सेवा विभाग द्वारा सिलाई प्रशिक्षण केंद्र के शुभारंभ के अवसर पर संबोधित करते विहिप के. मंत्री व अ.भा सेवा प्रमुख श्री अजेय पारीक जी, मंच पर उपस्थित प्रांत के पदाधिकारी व कार्यकर्ता

न्यूजिलैंड, हिंदू एल्डर्स फाउंडेशन और हिंदू महिला मंच द्वारा हिंदू हेरिटेज सेंटर में आयोजित श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर कार्यक्रम में उपस्थित कार्यकर्ता

सिरोंज, जिला विदिशा (म.प्र.) में विहिप स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप प्रांत सहमंत्री श्री मलखान सिंह तथा कार्यक्रम में उपस्थित प्रांत के पदाधिकारी

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हे शक्तिसम्पन्न इन्द्रदेव! इस जीवन संग्राम में देवों का पक्ष ग्रहण करने वाले आप हमारा विनाश न करें। आप ज्ञानी हैं। कामनापूर्तिरूप वृष्टिकर्ता तथा हवि द्रव्य को ग्रहण करने वाले इन्द्रदेव इस यवमय हवि के समान आपका माहात्म्य है। हमारी वाणी आपके मित्र मरुतों की भी स्तुति करती है।

– यजुर्वेद

16–30 सितम्बर, 2025

आश्विन कृष्ण- शुक्ल पक्ष

पिंगल संवत्सर

वि. सं. – 2082, युगाब्द– 5127

सम्पादक

विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक

मुरारी शरण शुक्ल

मो. – 7217685539

परामर्शदाता

सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,

विजय कुमार,

रवि पराशर

व्यवस्थापक

श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. – 09582555152

सज्जा

श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :

'हिन्दू विश्व'

संकटमोचन आश्रम, प्रभाग – 6

रामकृष्णपुरम्,

नई दिल्ली–110022–05

दूरभाष : 09582555152

011–26178992, 011–26103495

hinduvishwa@gmail.com

– : मूल्य :–

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/–
वार्षिक	300/–
त्रिवर्षीय	750/–
पंचवर्षीय	1,200/–
दसवर्षीय	2,250/–
पन्द्रह वर्षीय	3,100/–

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज – 28

स्वदेशी अपनाएँ, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करें	07
हिंदू ग्रंथों और मान्यताओं में पर्यावरण रक्षा	08
हिन्दू दर्शन ही विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा : अम्बरीष	09
टूटते संयुक्त परिवार और बिखरता समाज	10
आइए! संयुक्त परिवार की ओर वापस चलें...	12
आज का पीडीए फॉर्मूला 1923 के अमानवीय कृत्य जैसा	15
ट्रम्प का टैरिफ नहीं रोक पाएगा भारत को	17
विकराल होते आनलाइन गेम पर नियंत्रण का कानून सराहनीय	19
रोगचर्या	21
मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करें	22
युवा वर्ग में कौशल विकास से सबल एवं स्वावलंबी बनेगा समाज : अजय पारीक	23
हिंदू हेरिटेज सेंटर रोटोरूआ में आयोजित हुआ श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह	24
अशोक सिंघल सेवा धाम वात्सल्य वाटिका	25
विहिप स्थापना दिवस पर हुआ समिति सम्मेलन	26

सुभाषित

नरस्याभरणं रूपं रूपस्याभरणं गुणः।

गुणस्याभरणं ज्ञानं ज्ञानस्याभरणं क्षमा।।

मनुष्य का अलंकार (गहना) रूप होता है, रूप का अलंकार (गहना) गुण होता है, गुण का अलंकार (गहना) ज्ञान होता है और ज्ञान का अलंकार (गहना) क्षमा होता है।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

कुटुंब व्यवस्था भारत की अमूल्य धरोहर

भारतीय संस्कृति की आत्मा को यदि किसी एक सूत्र में पिरोया जा सके तो वह है – कुटुंब व्यवस्था। "वसुधैव कुटुंबकम्" का उद्घोष केवल कोई दार्शनिक कल्पना नहीं है, बल्कि यह भारत के सामाजिक जीवन की धड़कन है। आज जब आधुनिकता के दबाव और पाश्चात्य जीवनशैली के आकर्षण में परिवार टूट रहे हैं, तब यह स्मरण करना और भी आवश्यक है कि हमारी कुटुंब व्यवस्था केवल रहने का ढांचा नहीं है, बल्कि जीवन को संतुलित, सुखी और संपन्न बनाए रखने का आधार है।

भारतीय कुटुंब व्यवस्था की विशेषता यह रही है कि इसमें केवल माता–पिता और संतान ही नहीं, बल्कि दादा–दादी, चाचा–चाची, भाई–बहन, भतीजे–भतीजियां, सभी एक साथ रहते हैं। यह बहुस्तरीय संरचना जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर सहयोग, अनुभव और मार्गदर्शन का वातावरण निर्मित करती है। बुजुर्गों का अनुभव और आशीर्वाद परिवार के लिए अमूल्य पूंजी होता है, वहीं युवा पीढ़ी की ऊर्जा और श्रम परिवार को निरंतर प्रगतिशील बनाए रखते हैं। इस समन्वय से उत्पन्न शक्ति ही परिवार को 'सुखी और संपन्न' बनाए रखती है।

आज पश्चिमी जगत जिस समस्या से जूझ रहा है–एकाकीपन, मानसिक तनाव, वृद्धाश्रम की बढ़ती आवश्यकता और टूटते हुए रिश्ते, उसका समाधान भारत ने बहुत पहले अपनी कुटुंब व्यवस्था में खोज लिया था। हमारे यहाँ वृद्धों को बोझ नहीं समझा जाता, बल्कि परिवार के आधार स्तंभ के रूप में उनका सम्मान होता है। बच्चों का पालन–पोषण केवल माता–पिता तक सीमित नहीं रहता, वरन् पूरा परिवार उन्हें संस्कारवान और उत्तरदायी बनाने में योगदान देता है। यही कारण है कि भारतीय समाज में नैतिकता, संवेदना और आपसी सहयोग के संस्कार गहरे पैठे हुए हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी कुटुंब व्यवस्था अत्यंत उपयोगी रही है। संयुक्त परिवार में संसाधनों का सांझा उपयोग होता है, जिससे फिजूलखर्ची रुकती है और संपन्नता का वातावरण बनता है। परिवार का प्रत्येक सदस्य अपनी आय और श्रम से योगदान करता है, जिससे किसी एक पर बोझ नहीं पड़ता। संकट की घड़ी में भी यही व्यवस्था परिवार को सहारा देती है। यही कारण है कि भारत में सदियों तक विपरीत परिस्थितियों के बावजूद समाज टिकाऊ और आत्मनिर्भर रहा।

किन्तु आज उपभोक्तावाद, व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अंधी दौड़ और पाश्चात्य जीवनशैली की नकल ने परिवार संस्था पर गहरा प्रहार किया है। महानगरों में 'न्यूक्लियर फैमिली' तेजी से बढ़ रही है। एक ओर यह स्वतंत्रता का आभास देती है, लेकिन दूसरी ओर अकेलेपन, असुरक्षा और टूटते रिश्तों का कारण भी बन रही है। परिवार का विघटन समाज की स्थिरता को हिला देता है। यदि इस प्रवृत्ति को समय रहते नहीं रोका गया, तो, भारत की यह अमूल्य धरोहर नष्ट हो जाएगी और इसके साथ ही हमारे समाज की मूल आत्मा भी क्षीण हो जाएगी।

समाधान क्या है? सबसे पहले हमें यह स्वीकार करना होगा कि कुटुंब व्यवस्था कोई बोझ नहीं, बल्कि जीवन की सुरक्षा–कवच है। शिक्षा संस्थानों, मीडिया और समाज–नेताओं को परिवार की महत्ता पर जोर देना होगा। विवाह संस्था की पवित्रता, माता–पिता के प्रति सम्मान, बच्चों में परिवार के प्रति उत्तरदायित्व की भावना, इन सबका पुनरुत्थान करना होगा। साथ ही, आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुसार परिवार व्यवस्था में लचीलापन भी होना चाहिए, ताकि वह बदलते समाज के साथ तालमेल बिठा सके।

आज उपभोक्तावाद, व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अंधी दौड़ और पाश्चात्य जीवनशैली की नकल ने परिवार संस्था पर गहरा प्रहार किया है। महानगरों में 'न्यूक्लियर फैमिली' तेजी से बढ़ रही है। एक ओर यह स्वतंत्रता का आभास देती है, लेकिन दूसरी ओर अकेलेपन, असुरक्षा और टूटते रिश्तों का कारण भी बन रही है। परिवार का विघटन समाज की स्थिरता को हिला देता है। यदि इस प्रवृत्ति को समय रहते नहीं रोका गया, तो, भारत की यह अमूल्य धरोहर नष्ट हो जाएगी और इसके साथ ही हमारे समाज की मूल आत्मा भी क्षीण हो जाएगी।

नगरिक शिष्टाचार क्यों महत्वपूर्ण है ?

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

जब हम 'अमृत काल' में प्रवेश कर चुके हैं और 2047 तक अपने देश को हर दृष्टि से पूर्ण विकसित देखना चाहते हैं, समाज के सदस्य होने के नाते, उच्च नागरिक व्यवहार करना हमारी जिम्मेदारी है। हमारे नागरिक व्यवहार और गतिविधियों का विश्वव्यापी स्तर पर, सामाजिक स्वास्थ्य और राष्ट्रीय सम्मान पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। हम अपनी जड़ों को भूल गए हैं और पश्चिमी सँस्कृति को अपना लिया है, जिसके परिणामस्वरूप एक कृत्रिम और सतही समाज बन गया है, जो उस नागरिक भावना को भूल गया है, जिसका हमारे पूर्वजों ने अभ्यास किया था और हमें सिखाया भी था, लेकिन हम स्वार्थी हो गए हैं और नागरिक भावना को सरकार या अन्य लोगों की जिम्मेदारी मानते हैं। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे को अपनी पंच परिवर्तन योजना में शामिल किया है, जिसे वे चाहते हैं कि सभी भारतीय नागरिक–प्रधान समुदाय को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए अपनाएँ। भारत की साँस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध है और भारतीय अच्छे आचरण वाले स्वच्छ, स्वस्थ वातावरण में रहते थे। इसलिए सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, हमें उन मुद्दों का समाधान करना होगा, जिनके कारण अधिकांश भारतीयों ने इन गुणों को खो दिया है।

दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली जिसने हमारे स्वार्थ और लालच को जन्म दिया

'मैकाले की शिक्षा प्रणाली' की समस्या यह है कि न तो हमारे माता–पिता, न ही हमारे प्रशिक्षकों या सँस्थानों के पास अगली पीढ़ी को इस विषय पर सिखाने के लिए शिक्षा, विशेषज्ञता या संवेदनशीलता है। हालाँकि ये विषय पाठ्यक्रम में सतही तौर पर शामिल हैं, शिक्षा प्रणाली और उसके संकाय इन कांच के टुकडों को दर्पण में बदलने में विफल हो रहे हैं। परिणामस्वरूप हमारे बच्चों को हमारी सँस्कृति और नैतिकता के बारे में नहीं सिखाया जाता है। पाठ्यपुस्तकों में वर्णित कोई भी नैतिकता उन बच्चों की मदद नहीं कर सकती, जिनके माता–पिता नशे में हैं, जुआ खेलते हैं या धोखेबाज हैं, इसलिए हमारे शिक्षण कर्मचारियों, प्रशासन, समाज और माता–पिता सभी को इस गंदगी को साफ करने में मदद करनी चाहिए।

यह तथ्य कि आज का शिक्षित युवा यह नहीं मानता कि उन्हें अपने आचरण के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, कुछ हद तक निराशाजनक है। उन्हें इस बात की जरा भी परवाह नहीं है कि उनके व्यवहार का उनके आसपास के लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है ? हम दावा करते हैं कि नियम तोड़ने के लिए बनाए जाते हैं और हम उन्हें तोड़ते हैं। लेकिन इसका उन लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है जो नियम बनाते हैं ? इसका उन लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है जो वास्तव में नियमों का पालन करने की कोशिश करते हैं ? हम जानते हैं कि हमारी गतिविधियों का इन प्रभावों पर सीधा असर पड़ता है, जिन्हें हम रोजाना देखते हैं। फिर भी हम खुद को जिम्मेदार नहीं मानते। हम इसकी परवाह नहीं करते और इसे हल्के में लेते हैं।

यातायात नियमों के उल्लंघन के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव क्या हैं

हम यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं और किसी को आजीवन चोट पहुँचाते हैं। हमने नियम तोड़ा है, इसलिए हमें पता है कि ऐसा हुआ है। हम अपने बचाव के लिए 'यह भारत है' का बहाना बनाते हैं। हम अपने बचाव के लिए 'दुर्घटनाएँ तो हर जगह होती हैं' का बहाना भी बनाते हैं। अगर हम इस बात पर विचार करें कि ऐसा क्यों हुआ, बजाय इसके कि ऐसा होना ठीक क्यों है, तो हम यातायात उल्लंघनों के कारण लोगों को चोट लगने या मारे जाने से बचा सकते हैं। मैं

इस गुण के कई उदाहरण दे सकता हूँ, लेकिन यह उन कई गुणों में से एक है, जिनकी भारतीयों में वास्तव में कमी है। भारतीय आम तौर पर बुद्धिमान होते हैं। हम एक–दूसरे के साथ सम्मान से पेश आते हैं। हमारे अंदर भावनाएँ होती हैं। हमारे अंदर देशभक्ति की भावना होती है। अगर हमें अपने आचरण के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया जाता, तो इनमें से कोई भी गुण सार्थक नहीं है। हमें अभी भी इस पर बहुत काम करना है, और हो सकता है कि आम शिक्षित भारतीय आबादी को यह गुण सीखने में कुछ समय लगे !

2021 के लिए प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश के पुलिस विभागों के आँकड़ों के अनुसार देश भर में सड़क दुर्घटनाओं में 153972 मौतें हुईं और 172278 लोग गंभीर रूप से घायल हुए। DIMTS के पेपर 'भारत में सड़क दुर्घटनाओं की सामाजिक–आर्थिक लागत' के अनुसार, जिसे TRIPP&IIT दिल्ली के साथ सह–लेखन किया गया था, यातायात दुर्घटनाओं का सामाजिक–आर्थिक खर्च देश के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 3.14 प्रतिशत है।

सड़क के प्रकार के अनुसार यातायात दुर्घटनाओं और मौतों के प्रमुख कारक

2022 में देश भर में हुई 4,61,312 दुर्घटनाओं में से 1,51,997 (32.9 प्रतिशत) एक्सप्रेसवे सहित राष्ट्रीय राजमार्गों (NH) पर, 1,06,682 (23.1 प्रतिशत) राज्य राजमार्गों (SH) पर हुईं और शेष 2,02,633 (43.9 प्रतिशत) अन्य सड़कों पर हुईं। 2022 में दर्ज 1,68,491 मौतों में से 61,038 (36.2 प्रतिशत) राष्ट्रीय राजमार्गों पर, 41,012 (24.3 प्रतिशत) राज्य राजमार्गों पर और 66,441 (39.5 प्रतिशत) अन्य सड़कों पर हुईं। 2022 में दर्ज 1,55,781 घातक दुर्घटनाओं में से 55,571 (35.7 प्रतिशत) राष्ट्रीय राजमार्गों पर, 39,861 (24.3 प्रतिशत) राज्य राजमार्गों पर 62,349 (40 प्रतिशत) अन्य सड़कों पर हुईं।

"भारत की साँस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध है और भारतीय अच्छे आचरण वाले स्वच्छ, स्वस्थ वातावरण में रहते थे। इसलिए सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, हमें उन मुद्दों का समाधान करना होगा, जिनके कारण अधिकांश भारतीयों ने इन गुणों को खो दिया है।

पर्यावरण प्रबंधन और स्वच्छता क्यों महत्वपूर्ण है?

मुझे लगता है कि वर्तमान सरकार, जिसने एक बड़ा सफाई अभियान शुरू किया है, जिसकी लंबे समय से प्रतीक्षा थी, को छोड़कर, हम भारत में अपने घरों के बाहर स्वच्छता के बारे में शायद ही कभी सोचते हैं। अन्यथा बोतलें, रैपर, पैकेट और अन्य गैर–प्लास्टिक कचरे का उपयोग हमारी सड़कों और राजमार्गों को प्लास्टिकयुक्त बनाने के लिए नहीं किया जाता। अब जब हम शिखर पर पहुँच गए हैं, तो हम कुछ करने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन मुझे नहीं पता कि हमारे सभी स्थानों को हरा–भरा और स्वच्छ बनाने में कितना समय लगेगा। यह हमारे राष्ट्र के प्रति अनादर है और हमारे पर्यावरण के लिए पूरी तरह से अपमानजनक है। प्रत्येक भारतीय नागरिक का नैतिक कर्तव्य है कि वह एक स्वच्छ गाँव, शहर और स्वच्छ वातावरण बनाए रखे। चूँकि कानून प्रवर्तन इस प्रकार की समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता, इसलिए हमारी सरकार और अन्य गैर–सरकारी संगठनों को विभिन्न पहलों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाने के लिए काम करना चाहिए। भारत में इन समस्याओं से निपटने और देश को स्वच्छ रखने के लिए कानून मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय दंड संहिता में कूड़ा–कचरा फैलाने और सार्वजनिक गंदगी से संबंधित धाराएँ शामिल हैं और विभिन्न स्थानीय सरकारों ने इन मुद्दों से निपटने के लिए अपनी नीतियाँ बनाई हैं।

थूकना मना है, जैसा कि हमने रेलवे, मेट्रो, बस और शॉपिंग सेंटरों में कई पोस्टरों पर देखा है, लेकिन कई लोग जानबूझकर इस व्यवहार में लिप्त रहते हैं। स्वच्छता, सफाई और उचित अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए भी पहल शुरू की गई है, जैसे स्वच्छ भारत अभियान। अनुमानों के अनुसार भारतीय रेलवे संपत्ति पर तंबाकू और पान का सेवन करने वालों के थूकने से छोड़े गए दाग और निशानों को हटाने के लिए हर साल 1,200 करोड़ रुपये और अधिक मात्रा में पानी खर्च करता है। खराब स्वच्छता का सामाजिक और आर्थिक विकास के साथ–साथ मानव कल्याण पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि इससे चिंता, यौन उत्पीड़न का खतरा, रोजगार और शिक्षा के अवसरों की हानि हो सकती है। खराब स्वच्छता आंतों के कृमि संक्रमण, पोलियो, टाइफाइड और हैजा व पेचिश जैसी दस्त संबंधी बीमारियों के प्रसार से जुड़ी है। इससे बौनापन और एंटीबायोटिक प्रतिरोध का प्रसार दोनों बदतर हो जाते हैं।

खुले में शौच से गरीबी और बीमारी का एक अंतहीन चक्र बना रहता है। पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर, गरीबी और भुखमरी की सबसे खराब दरें, साथ ही सबसे बड़ा धन अंतर, उन देशों में देखा जाता है, जहाँ खुले में शौच की दर सबसे अधिक है। 2014 में कार्यभार संभालने के बाद से, वर्तमान केंद्र सरकार ने खुले में शौच की दर, जो लगभग 60 प्रतिशत थी, को कम करने के लिए सराहनीय प्रयास किए हैं।

यह याद रखना जरूरी है कि ऐसी गतिविधियों से निपटने के लिए सिर्फ कानूनी कार्रवाई करना ही काफी नहीं है। इसके लिए नागरिक कर्तव्य, पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना भी जरूरी है। सामाजिक मानदंडों, जन अभियानों, शिक्षा और सामुदायिक भागीदारी से एक स्वच्छ और अधिक विनम्र वातावरण को बढ़ावा दिया जा सकता है। इस अद्भुत राष्ट्र के निवासियों के रूप में, भारतीय संविधान द्वारा स्थापित सभी कानूनों, नियमों और विनियमों का पालन करना हमारा कर्तव्य है। हमें जो भी कार्य करना है, उसे इस समझ के साथ करना चाहिए कि वह कानून का उल्लंघन नहीं करेगा या पर्यावरण, समाज या राष्ट्र पर नकारात्मक प्रभाव नहीं डालेगा। हमारा दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि सारी सरकारी संपत्ति मेरी संपत्ति है और मुझे उसकी रक्षा और देखभाल करनी चाहिए।

pankajjayswal1977@gmail.com

स्वदेशी अपनाएँ, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करें

जगजीत सिंह जगत

हमने अपना 79वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया–वह दिन जब हमारे देश ने वर्षों की गुलामी के बाद आजादी पाई थी। यह दिन केवल तिरंगा फहराने और राष्ट्रगान गाने का नहीं बल्कि यह बलिदान और संकल्प को याद करने का भी है, जिसने हमें यह आजादी दिलाई। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज तक देश की रक्षा में अपने प्राण न्योछावर करने वाले सभी अमर शहीदों को कोटि–कोटि नमन एवं भावपूर्ण श्रद्धांजलि। अब समय है कि हम इस आजादी को और मजबूत करें। विदेशी वस्तुओं के प्रभाव से मुक्त होकर, स्वदेशी अपनाकर। हम विदेशी सामान का बहिष्कार करेंगे और स्वदेशी को अपनाएँगे। विदेशी चीजें हमारे जीवन पर हावी न हों, जैसे अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने देश के हित में भारत पर 50 प्रतिशत तक आयात–निर्यात शुल्क लगाया, वैसे ही हमें भी अपने उद्योग और सँस्कृति की रक्षा करनी होगी। कोल्ड ड्रिंक, फास्ट फूड, मोबाइल, मशीनरी, दवाइयाँ, गारमेंट्स – हर क्षेत्र में हम भारतीय विकल्प अपनाएँगे।

विदेशी ब्रांड्स का बहिष्कार

डोनाल्ड ट्रंप के 50 प्रतिशत आयात शुल्क लगाने के बाद भारत में अमेरिकी ब्रांड्स (McDonald's, Coca&Cola, Amazon, Apple) के बहिष्कार की मांग बढ़ी है। सोशल मीडिया पर "Buy Local" और (Swadeshi Apnao) जैसे अभियान चल रहे हैं। पर इससे कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ रहा। हम सभी देशवासियों को मिल कर इस अभियान को सफल बनाने का काम करना चाहिए।

स्वदेशी सामान अपनाने से फायदे

1. **स्वास्थ्य लाभ** – कोल्ड ड्रिंक और फास्ट फूड से दूरी बनाकर दूध, दही, घी और पारंपरिक छप्पन भोग अपनाने से बीमारियाँ कम होंगी।
2. **आर्थिक मजबूती** – जब हम स्वदेशी खरीदेंगे तो पैसा देश में ही घूमेगा और स्थानीय उद्योग बढ़ेंगे।
3. **रोजगार के अवसर पैदा करना** – देश में उत्पादन बढ़ने से लाखों नए रोजगार बनेंगे। सरकारी और निजी कंपनियों में अवसर मिलने से लोगों को रोजगार मिलेगा और अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिलेगा।
4. **सँस्कृति सुरक्षित** – भारतीय उत्पादों में हमारी परंपरा और पहचान झलकती है।

विदेशी बनाम स्वदेशी

- **कोल्ड ड्रिंक** – कोका–कोला, पेप्सी जैसी विदेशी कंपनियों की जगह लस्सी, छाछ, शरबत, आम पन्ना, नींबू पानी और विभिन्न प्रकार के जूस जैसे भारतीय विकल्प अपनाएँ।
- **फास्ट फूड** – McDonald, KFC जैसे विदेशी ब्रांड्स की जगह स्थानीय ढाबों, भारतीय स्नैक्स और परंपरागत 36 भोग व्यंजनों को बढ़ावा दें।
- **गारमेंट्स** – कई विदेशी ब्रांड्स भारत और बाँग्लादेश जैसे देशों में कपड़े बनवाकर, अपने लेबल लगाकर करोड़ों का मुनाफा कमाते हैं। हम भारतीय ब्रांड्स जैसे Raymond, Manyavar, FabIndia, TT Garments को अपनाएँ।
- **मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स** – Apple, Samsung जैसी कंपनियों पर निर्भरता कम करके Lava, Micromax, Dixon जैसे भारतीय ब्रांड्स को बढ़ावा दें।
- **दवाइयाँ** – भारत पहले से ही एक बड़ा फार्मा निर्माता है, लेकिन विदेशी ब्रांड्स का आयात अधिक है। हमें भारतीय जेनेरिक दवाओं को अपनाना चाहिए।

अभी भारत सरकार द्वारा कुछ उत्पाद जैसे इलेक्ट्रॉनिक्स कच्चा माल, चमड़ा और हथकरघा उपकरणों पर शुल्क घटाया गया है, ताकि "Make in India" को बढ़ावा मिले। परन्तु दूसरी तरफ FTA (Free Trade Agreements) के तहत कुछ देशों जैसे UK से आने वाले फैशन और ब्यूटी उत्पादों पर शुल्क हटाया गया है, जिससे विदेशी ब्रांड्स को लाभ हो रहा है।

15 अगस्त केवल स्वतंत्रता का पर्व नहीं, बल्कि यह आत्मंथन का दिन भी है – हम कहाँ से आए, कहाँ खड़े हैं और कहाँ जाना चाहते हैं। भारत का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि हम सेना के शौर्य, आर्थिक प्रगति, अंतरराष्ट्रीय संतुलन, और लोकतांत्रिक मूल्यों को कितनी मजबूती से थामे रखते हैं। आने वाले वर्षों में अगर हम इन सबका संतुलन बनाए रखें, तो "विश्व गुरु" का सपना दूर नहीं।

आओ! हम सभी मिलकर इस आजादी दिवस पर यह प्रण लें – "विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करें, स्वदेशी को अपने जीवन में लाएँ, और भारत को आत्मनिर्भर बनाएँ।" यह न सिर्फ हमारे देश की अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य के लिए जरूरी है, बल्कि यह हमारी असली स्वतंत्रता की दिशा में अगला बड़ा कदम है।

मेरा भारत महान!
जय हिंद ! जय भारत !

हिंदू ग्रंथों और मान्यताओं में पर्यावरण रक्षा

विनोद बंसल

मानव और प्रकृति का संबंध प्राचीन काल से रहा है। इसके बावजूद विकास के नाम पर मानव प्रकृति का दोहन ही करता जा रहा है। अनेक व्यवसाय व उद्योग धंधों ने जहाँ रोजगार व अर्थ व्यवस्था को नई ऊँचाईयों पर पहुँचाया वहीं पर्यावरण के विनाश से मानव जीवन व प्रकृति के लिए गंभीर संकट भी पैदा किए। आज वैश्विक मंचों से इसे बचाने की नई नई पहल हेतु बड़े–बड़े सम्मेलन और अधिवेशन हो रहे हैं। यहां तक कि इसके लिए युद्ध तक हुए हैं। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, लगातार पहाड़ों का गिरना, बाढ़ व अन्य प्राकृतिक आपदाएँ भी पर्यावरण और प्रकृति से छेड़छाड़ के ही दुष्परिणामों के रूप में हमारे सामने आ रहे हैं। आज आवश्यकता है विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच एक अच्छा संतुलन बनाने की।

हिंदू धर्मशास्त्रों ने जहाँ प्रकृति को देवस्वरूप मानकर उसकी रक्षा का आदेश दिया है, वहीं भारतीय जनजातीय समाज ने भी प्रकृति को अपनी जीवनशैली और सँस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनाया। हिंदू ग्रंथों की शिक्षाएँ, मान्यताएँ और जनजातीय सँस्कृति मिलकर पर्यावरण रक्षा की अद्भुत परंपराओं की द्योतक हैं। आइए उन सब पर विचार करते हैं...

वेदों और उपनिषदों में पर्यावरण संदेश

ऋग्वेद और अथर्ववेद में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को देवता कहा गया है। "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" (अथर्ववेद 12.1.12)–पृथ्वी माता है और मनुष्य उसका पुत्र। ईशोपनिषद कहता है–"ईशावास्यमिदं सर्वं" अर्थात पूरी सृष्टि ईश्वर से आच्छादित है, इसका दुरुपयोग पाप है।

श्रीमद्भगवत गीता जी

भगवद्गीता में बताया गया कि अन्न वर्षा से होता है और वर्षा यज्ञ (सत्कर्म एवं प्रकृति संतुलन) से होती है। और यज्ञ मनुष्य द्वारा किया गया श्रेष्ठतम कर्म माना गया है।

पुराण व मनुस्मृति

भागवत पुराण में वृक्षों को देवता कहा

गया है, क्योंकि वे निःस्वार्थ भाव से जीवनदायिनी वायु व वस्तुएँ देते हैं। मनुस्मृति में वृक्षों की कटाई पर दंड और वृक्षारोपण को पुण्यकर्म माना गया है।

लोक परंपराएँ और प्रकृति संरक्षण

वृक्ष पूजा – तुलसी, पीपल, वट, नीम और बेल की पूजा।

नदी और पर्वत पूजन – गंगा, यमुना जैसी नदियों और गिरिराज पर्वत को पवित्र मानकर उनके रक्षण और पूजन हेतु हिंदू समाज बड़ी सँख्या में जुटता है और उनकी पूजा व परिक्रमा भी करता है।

'पशु संरक्षण' – गौ माता, नाग देवता, हाथी, गरुड़, वानर आदि की आराधना का विधान है।

'त्योहार' – कुंभ स्नान, छठ पूजा, मकर संक्रांति, गिरिराज परिक्रमा इत्यादि हमारे अनेक त्योहार वृक्षारोपण, जल नदियों व पर्वत पूजन कर प्रकृति के संरक्षण को जनमानस से जोड़ते हैं। ऐसे असँख्य दृष्टांत और उदाहरण हमारे शास्त्रों और परंपराओं का हिस्सा अनादिकाल से रहे हैं।

जनजातीय समाज का योगदान

भारतीय जनजातीय समाज ने तो बिना किसी लिखित ग्रंथों के ही प्रकृति को ईश्वर माना और उसे संरक्षित किया। भील, संथाल, गोंड, उरांव, नागा आदि जनजातियाँ विशेष रूप से वृक्षों को पवित्र मानकर काटने से बचाती हैं। कई जनजातियाँ टोटेम (वंशचिह्न) मानकर किसी विशेष पशु या पक्षी की रक्षा करती हैं। आदिवासी समाज झरनों, तालाबों और नदियों को पवित्र मानकर उन्हें प्रदूषित नहीं करता। बस्तर, झारखंड और उत्तर–पूर्व की जनजातियाँ पहाड़ों और जंगलों को देवता मानकर उनकी पूजा करती हैं। सरना पूजा, करमा उत्सव, मड़ई पर्व जैसे उत्सव प्रकृति की रक्षा और सामूहिक चेतना को प्रबल करते हैं।

आज जब प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से एक वैश्विक संकट खड़ा है, तब हिंदू धर्मग्रंथों, जीवन मूल्यों और उनसे जुड़ी जनजातीय परंपराओं का संदेश और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। वनों, वृक्षों, नदियों व जीव जंतुओं की रक्षा धार्मिक, सामाजिक व राष्ट्रीय कर्तव्य है। नदियों और जलस्रोतों की स्वच्छता व संरक्षण हमारी सामूहिक सामाजिक और आध्यात्मिक जिम्मेदारी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पंच परिवर्तनों में भी एक पर्यावरण संरक्षण शामिल है। पशु–पक्षियों और जैव विविधता का संरक्षण भी हमारी सँस्कृति की जड़ों में समाहित है।

हिंदू धर्म ग्रंथों ने जहाँ पर्यावरण रक्षा को धर्म बताया, वहीं जनजातीय समाज ने इसे जीवन पद्धति बना लिया। ये सम्मिलित शिक्षाएँ हमें बारम्बार स्मरण कराती हैं कि प्रकृति की रक्षा ही मानव जीवन की रक्षा है।

हिन्दू दर्शन ही विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा: अम्बरीष

'स्वतंत्रता के पश्चात सेक्युलरवाद के नाम पर हिन्दू समाज के साथ बढ़ते अन्याय तथा ईसाईयों व मुसलमानों के तुष्टीकरण के बीच 1957 में आई नियोगी कमीशन की आँखें खोल देने वाली रिपोर्ट ने हिन्दू समाज के कर्णधारों की नींद उड़ा दी। रिपोर्ट में ईसाई मिशनरियों द्वारा छल, कपट, लोभ, लालच व धोखे से पूरे देश में हिंदुओं के धर्मांतरण की सच्चाई सामने आने के बावजूद केंद्र सरकार ने इसे रोकने के लिए प्रभावी केंद्रीय कानून बनाने से स्पष्ट मना कर दिया। इसके अलावा हिन्दू समाज में भी अनेक आंतरिक संघर्ष चल रहे थे, जिनके कारण भी देश का संत समाज चिंतित था। विदेशों में रहने वाला हिन्दू समाज भी अपनी विविध समस्याओं के समाधान हेतु भारत की ओर ताक तो रहा था, किन्तु केंद्र सरकार के हिन्दुओं के प्रति उदासीन रवैए के कारण वह भी निराश था। ऐसे में हिन्दू समाज के जागरण और संगठन की आवश्यकता महसूस होने लगी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूज्य श्री गुरुजी की प्रेरणा, समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में कार्य करने वाली सज्जन शक्तियों की एक बैठक बुलाई गई। यह बैठक 29 अगस्त 1964 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर पवई, मुम्बई स्थित पूज्य स्वामी चिन्मयानन्द जी के आश्रम सांदीपनि साधनालय में बुलाई गई। इसमें पूज्य स्वामी चिन्नमयानन्द, राष्ट्रसंत तुकड़ो जी महाराज, सिख सम्प्रदाय से मास्टर तारा सिंह, जैन सम्प्रदाय से पूज्य सुशील मुनि, गीता प्रेस गोरखपुर से हनुमान प्रसाद पोद्दार, के. एम. मुंशी तथा पूज्य श्री गुरुजी सहित 40–45 अन्य महानुभाव भी उपस्थित थे। इसी दिन इन महापुरुषों ने विश्व हिंदू परिषद के गठन की घोषणा कर दी। 22 से 24 जनवरी 1966 को कुम्भ के अवसर पर 12 देशों के 25 हजार प्रतिनिधियों की सहभागिता के साथ प्रथम विश्व हिंदू सम्मेलन प्रयाग में आयोजित किया गया। 300 प्रमुख संतों की सहभागिता के साथ पहली बार प्रमुख शंकराचार्य भी एक साथ आए और धर्मांतरण पर रोक व परावर्तन (घरवापसी) का संकल्प लिया गया। मैसूर के महाराजा मा. चामराज

जी वाडियार को अध्यक्ष व दादासाहब आप्टे को पहले महामंत्री के रूप में घोषित कर विहिप की प्रबंध समिति की घोषणा भी हुई। इस सम्मेलन में जहाँ परावर्तन को मान्यता देने का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित हुआ, वहीं विहिप के बोध वाक्य 'धर्मो रक्षति रक्षितः' और बोध चिह्न 'अक्षय वटवृक्ष' भी तय हुआ।

बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर का मत था कि यदि देश के संत महात्मा मिलकर यह घोषित कर दें कि हिन्दू धर्म–शास्त्रों में छुआछूत का कोई स्थान नहीं है, तो इस अभिशाप को समाप्त किया जा सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए 13–14 दिसम्बर 1969 के उडुपी धर्म संसद में संघ के तत्कालीन सर–संघचालक श्री गुरूजी के विशेष प्रयासों के परिणाम स्वरूप, भारत के प्रमुख संतों ने एकस्वर से हिन्दवः सोदरा सर्वे, ना हिन्दू पतितो भवेत् के उद्घोष के साथ सामाजिक समरसता का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया।

1994 में काशी में हुई धर्म संसद का निमंत्रण डोम राजा को देने पूज्य संत ना सिर्फ स्वयं चलकर गए, बल्कि उनके घर का प्रसाद ग्रहण किया तथा अगले दिन डोम राजा धर्म संसद के अधिवेशन में संतों के मध्य बैठे और संतों ने उन्हें पुष्प हार पहनाकर स्वागत किया। इस धर्म संसद में 3500 संत उपस्थित थे। वनवासी, जनजाति, अति पिछड़ी व पिछड़ी जाति के हजारों लोगों को ग्राम पुजारी के रूप में प्रशिक्षण देकर उनका समय–समय पर अभिनन्दन व मंदिरों में पुरोहित के रूप में नियुक्ति विहिप के ग्राम पुजारी प्रशिक्षण अभियान के कारण ही संभव हुई।

विहिप की युवा शाखा बजरंग दल तथा दुर्गा वाहिनी ने 1984 से लेकर आज तक देश, धर्म, सँस्कृति व राष्ट्र की रक्षार्थ सदैव अग्रणी भूमिका निभाई है। सेवा, सुरक्षा व संस्कार इनके मूल मंत्र रहे हैं। सँस्कृत भाषा, वेद पाठशाला तथा सँस्कारों की अभिवृद्धि हेतु भी विहिप ने अनेक कदम उठाए हैं। विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा किए गए इन विभिन्न कार्यों तथा सफल आन्दोलनों के कारण हिन्दू दर्शन आज सम्पूर्ण विश्व के केंद्र में आ चुका है। अब विश्व को लगने लगा है कि हिन्दू दर्शन ही विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा।

chitranjan1964@gmail.com

टूटते संयुक्त परिवार और बिखरता समाज

प्रो. महेश चंद गुप्ता

हमारे समाज की आत्मा परिवार में बसती है। समाज की सबसे बड़ी शक्ति संयुक्त परिवार व्यवस्था रही है। तीन पीढ़ियों का एक साथ रहना, वृद्धों की देखरेख, बच्चों को सँस्कारित करने और परिवार के बीच अपनायत ही वह धुरी थी, जिस पर हमारी सँस्कृति और समाज टिका हुआ था, लेकिन दुर्भाग्य से आज यही मजबूत नींव दरक रही है। संयुक्त परिवार तेजी से टूट रहे हैं और उनकी जगह छोटे, एकल परिवार ले रहे हैं। परिणामस्वरूप, रिश्ते कमजोर हो रहे हैं, बुजुर्ग अकेलेपन से जूझने को मजबूर हैं और नई पीढ़ी सँस्कारों से दूर होती जा रही है। हम लोग हमेशा गर्व से कहते आए हैं कि हमारी सबसे बड़ी पूंजी हमारा परिवार है और परिवार में केवल माँ–बाप और बच्चे नहीं, बल्कि दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ–ताई और भाई–बहनों का पूरा कुनबा होता था, जो संयुक्त परिवार कहलाता था। इसी व्यवस्था ने हमें कठिन से कठिन दौर में भी संभाले रखा। आज यह सब कुछ बदल रहा है।

जीवन के सत्तर वसंत देख चुके मेरी पीढ़ी के लोगों ने संयुक्त परिवारों का सुनहरा जमाना देखा और जीया है। वह समय था जब दादी की गोद में बैठकर हम कहानियाँ सुना करते थे। रामायण और महाभारत के किस्से, पंचतंत्र की कहानियाँ बचपन में हमारे सँस्कार बन जाते थे। लेकिन अब उनकी जगह मोबाइल स्क्रीन ने ले ली है। बच्चे असली जीवन के अनुभवों से दूर कार्टून और गेम्स की आभासी दुनियाँ में पल–बढ़ रहे हैं। संयुक्त परिवारों में बच्चे बड़ों की देख–रेख में बड़े होते थे। कोई पढ़ाई में कमजोर होता, तो चाचा–ताऊ उसकी मदद करते, कोई बीमार पड़ता तो चाची–ताई तुरंत सेवा में जुट जातीं। यह सहयोग केवल परिवार तक सीमित नहीं था, बल्कि बच्चों की सोच में भी घर कर जाता। वे सबको साथ लेकर चलना सीखते और यही मूल्य समाज को मजबूत बनाते थे।

बड़ा सवाल है कि आखिर हमारे संयुक्त परिवार धीरे–धीरे बिखर क्यों गए? इसके पीछे कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है उपभोक्तावादी सँस्कृति। बाजार चाहता है कि हर परिवार छोटे–छोटे टुकड़ों में बँट जाए ताकि हर घर के लिए अलग टीवी, अलग फ्रिज, अलग गाड़ी बिके। जब एक परिवार चार हिस्सों में बँटता है, तो खपत चार गुना बढ़ जाती है। यही बाजार की रणनीति है।

दूसरा कारण है पाश्चात्य सँस्कृति का अंधानुकरण। मीडिया और फिल्मों ने यह छवि गढ़ दी कि संयुक्त परिवार झगड़ों की जड़ है और छोटे परिवार आधुनिकता के प्रतीक। युवाओं को लगने लगा कि संयुक्त परिवार में स्वतंत्रता नहीं, बोझ है। धीरे–धीरे यह धारणा समाज में बैठ गई है।

तीसरा कारण बदलती जीवनशैली है। शहरों में नौकरी के दबाव, कैरियर की दौड़ और कथित आजादी की सोच

ने भी परिवार को पीछे धकेला। अब युवा पीढ़ी 'मैं और मेरा परिवार' तक सीमित हो गई है। चौथा कारण, बहुत से लोगों द्वारा बेटियों के ससुराल में अनावश्यक दखलअंदाजी है। इस कारण वहाँ की शांति भंग होती है। बेटे–बहू अलग हो जाते हैं। संयुक्त परिवारों के बिखरने का यह भी बड़ा कारण बन रहा है। लेकिन सोचिए, कितना कुछ खो दिया है हमने इस बीच में? संयुक्त परिवार केवल रहने का ढांचा भर नहीं था, बल्कि यह जीवन जीने की पाठशाला था। दादा–दादी बच्चों को कहानियों से मूल्य सिखाते, माता–पिता अनुशासन देते और भाई–बहनों के बीच सहयोग व त्याग से धैर्य पैदा होता था। बुजुर्गों को सम्मान और सुरक्षा मिलती थी। बच्चे माता–पिता ही नहीं बल्कि पूरे परिवार से सँस्कार सीखते थे। पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी, बड़ों का आदर, अतिथि देवो भव की भावना संयुक्त परिवार की ही देन थे।

इस बात से क्या कोई इनकार कर सकता है कि भारत के सेवा, त्याग, सहनशीलता जैसे महान जीवन मूल्य संयुक्त परिवारों में ही जन्मे थे। यही कारण है कि हम हजारों सालों तक आक्रमणों, संकटों और बदलावों के बावजूद टिके रहे। इसके विपरीत, आज के छोटे परिवार की तस्वीर अलग है। बच्चे अकेलेपन से जूझते हैं। माँ–बाप नौकरी में व्यस्त रहते हैं, तो बच्चों का सहारा मोबाइल और इंटरनेट बन जाता है। बुजुर्ग या तो उपेक्षित हैं, या, वृद्धाश्रमों में धकेल दिए जा रहे हैं। रिश्तों में अपनापन घट गया है और स्वार्थ बढ़ रहा है। विवाह जैसी सँस्था कमजोर हो रही है। लिव–इन रिलेशनशिप जैसे विकल्प बढ़ रहे हैं। रिश्तों में स्थायित्व की जगह अस्थिरता आ रही है। नतीजा यह है कि समाज में मानसिक तनाव, अवसाद और असुरक्षा तेजी से बढ़ रही है।

कितना अफसोसनाक है कि हम राष्ट्र की एकता की बात तो करते हैं, लेकिन अपने ही परिवार की एकता नहीं बचा पा रहे हैं। संयुक्त परिवारों के बिखरने से समाज का ताना–बाना ढीला हो गया है। रिश्तों में वह गर्माहट नहीं रही, बच्चों में वह सँस्कार नहीं रहे और बुजुर्गों के लिए वह सम्मान नहीं रहा।

आज के छोटे परिवार की तस्वीर अलग है। बच्चे अकेलेपन से जूझते हैं। माँ–बाप नौकरी में व्यस्त रहते हैं, तो बच्चों का सहारा मोबाइल और इंटरनेट बन जाता है। वृद्धों या तो उपेक्षित हैं, या, वृद्धाश्रमों में धकेल दिए जा रहे हैं। रिश्तों में अपनापन घट गया है और स्वार्थ बढ़ रहा है। विवाह जैसी सँस्था कमजोर हो रही है। लिव–इन रिलेशनशिप जैसे विकल्प बढ़ रहे हैं। रिश्तों में स्थायित्व की जगह अस्थिरता आ रही है।

जब परिवार टूटते हैं, तो समाज भी बिखरता है और जब समाज बिखरता है, तो राष्ट्र की एकता भी खतरे में पड़ जाती है। खुशी की बात है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे संगठन कुटुंब प्रबोधन अभियान के जरिए परिवारों को जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन यह काम केवल किसी संगठन का नहीं बल्कि पूरे समाज का है। हमें खुद तय करना होगा कि हम अगली पीढ़ी को किस तरह का भारत सौंपना चाहते हैं ? बड़ा सवाल यह भी है कि हम आगे कैसे बढ़ें? सबसे पहले तो हमें संयुक्त परिवार को बोझ नहीं, बल्कि अपनी साँस्कृतिक संपत्ति मानना होगा। हमें समझना होगा कि आधुनिकता का मतलब परंपरा से कट जाना नहीं है। असली आधुनिकता वही है, जिसमें परंपरा और प्रगति का संतुलन हो। परिवारों को जोड़ना, बुजुर्गों को सम्मान दिलाना और बच्चों को सँस्कार देना, यही वह रास्ता है जिस पर चलकर हम अपने समाज को फिर से मजबूत बना सकते हैं। हमें यह सोचना होगा कि अगर परिवार टूटेंगे, तो समाज भी बिखरेगा और अगर परिवार मजबूत होंगे, तो देश भी मजबूत होगा।

संयुक्त परिवारों का टूटना केवल सामाजिक बदलाव नहीं बल्कि भारतीयता का क्षरण है। आने वाली पीढ़ियों को अकेलेपन और उपभोक्तावाद के हवाले करना सबसे बड़ा अपराध होगा। परिवार का बिखरना समाज और राष्ट्र के विखंडन की पहली सीढ़ी है। आवश्यकता इस बात की है कि हम फिर से उस अपनायत और सामूहिकता की भावना को जीवित करें, जिसने भारत को सभ्यता की सबसे पुरानी और मजबूत धारा बनाया था। याद रखिए–अगर परिवार एक होगा, तो, देश भी एक होगा।

(लेखक प्रख्यात शिक्षाविद्,
चिंतक और वक्ता हैं।)
profmcguptadelhi@gmail.com

आइए ! संयुक्त परिवार की ओर वापस चलें....

साक्षी अतुल पेठकर

बहुत दिनों से कोई मेरे घर नहीं आया, तो मैं सबके घर गया
सबने कहा, कोई नहीं आता, अब कोई नहीं।
कुछ समय से बदल रहीं थी, वह जगह और साथ–साथ घर
बहुत सारी उपयोगी चीजें पड़ी थीं, बदलने के लिए
बहुत सारी अनपेक्षित वस्तुएँ इंतजार में थीं, घरों में प्रवेश के लिए।
हम किसी घर की जगह बाजार जाते, और वापस अपने घर लौट आते
फिर बहुत दिनों बाद, जब नहीं आता कोई,
तो कुछ इसी तरह की बातें करते।

नवल शुक्ल की कविता 'घरों में प्रवेश के लिए' का वर्णन आज की विभाजित पारिवारिक व्यवस्था पर सटीक बैठता है। आजकल लोग सिर्फ शुभ अवसरों पर या मृत्यु पर ही एक–दूसरे के घर आते–जाते हैं। बाकी समय कोई एक–दूसरे से मिलने या हालचाल पूछने भी नहीं जाता। इस वजह से अकेलापन आ गया है। आठ–दस कमरों वाले बंगले जैसे घर में सिर्फ पति–पत्नी ही रहते हैं। वे अवसाद और अकेलेपन से घिरे रहते हैं। नतीजतन, दोनों के आत्महत्या करने की घटनाएँ घटती हैं। क्योंकि कहने और बात करने को बहुत कुछ है। लेकिन, कहने और बताने वाला कोई नहीं है। जब केयरटेकर चला जाता है, तो घर में सन्नाटा दौड़ता है। यही दृश्य सभी घरों में, यानी फ्लैटों में दिखाई देता है। मुझे डर है कि हम पारिवारिक पतन की ओर बढ़ रहे हैं...

भारत में पारिवारिक व्यवस्था, विशेषकर संयुक्त परिवार व्यवस्था, क्षीण होती जा रही है। शहरीकरण, औद्योगीकरण और पाश्चात्य सँस्कृति के प्रभाव के कारण विभाजित परिवारों की सँख्या बढ़ रही है। इससे सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर कई परिवर्तन हो रहे हैं। संयुक्त परिवार व्यवस्था में एक से अधिक पीढ़ियाँ या एक ही पीढ़ी के कई भाई–बहन एक ही घर में रहते थे। संयुक्त परिवार व्यवस्था कभी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित थी। लेकिन शहरीकरण के आगमन के बाद, वहाँ भी परिवार टूट रहे हैं। संयुक्त परिवार हिंदू समाज की एक विशेषता थी। लेकिन अब यह लुप्त हो रही है। शहर में फ्लैट सँस्कृति की तरह, ग्रामीण क्षेत्रों में संयुक्त परिवार व्यवस्था भी पुरानी होती जा रही है और वर्तमान में बहुत से लोग स्वतंत्र रूप से रहना पसंद कर रहे हैं। प्राचीन काल से ही ग्रामीण क्षेत्रों में, एक बड़े परिवार में सभी लोग मिल–जुलकर रहते थे। परिवार का सबसे बड़ा व्यक्ति प्रबंधक के रूप में परिवार के मामलों की देखभाल करता था। बड़े भाई को प्रबंधक होने का सम्मान दिया जाता था। सभी की एकता के बल पर, कुआँ खोदना, जमीन खरीदना और शादी–ब्याह जैसे बड़े लेन–देन आसानी से हो जाते थे। साथ ही कृषि व्यवसाय में लगे किसानों को मजदूर रखने की जरूरत नहीं पड़ती थी, क्योंकि उनके घर पर ही खेतों में काम करने वाले उनके अपने परिवार के लोग होते थे। इससे श्रम लागत में काफी बचत होती थी। साथ ही गाँव में बड़े परिवार का डर बना रहता था। हालाँकि समय के साथ, संयुक्त परिवार व्यवस्था में कई समस्याएँ उत्पन्न होने लगीं। संयुक्त परिवार व्यवस्था में, घर में छोटी–छोटी बातों पर विवाद होने लगे और सरकार की नीति के अनुसार, सदस्यों ने 'छोटा परिवार सुखी परिवार' कहकर अलग–अलग घर बसाना शुरू कर दिया। जमीन बाँटकर किसान छोटे–छोटे जोतदार बन

गए। विवाह समारोह समस्या बनने लगे। इसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों के कर्ज में डूबे होने की तस्वीर सामने आती है। जैसे–जैसे ग्रामीण क्षेत्रों के किसान अपने खेतों की ओर लौटने लगे हैं और रहने लगे हैं, गाँव वीरान होते जा रहे हैं।

पारंपरिक भारतीय परिवार व्यवस्था का मुख्य आधार परिवार के सभी सदस्यों के बीच सहयोग, समझ और एकता थी। संयुक्त परिवार में सभी सदस्य अपनी–अपनी जिम्मेदारियाँ निभाते थे। उदाहरण के लिए दादा–दादी बच्चों की देखभाल करते थे, माता – पिता घर के कामों में व्यस्त रहते थे और चाचा–चाची सामाजिक और मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करते थे। संयुक्त परिवार में सामाजिक सुरक्षा होती थी। सदस्य आपस में अपने सुख–दुख बाँटते थे। इससे सभी को मानसिक और भावनात्मक संबल मिलता था। मिल–जुलकर रहने और भोजन बाँटने की आदत थी। पारंपरिक भारतीय परिवारों में संपत्ति का समान वितरण होता था। साँस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं का ध्यान रखा जाता था। एक विस्तृत परिवार में रहते हुए, बच्चों को साँस्कृतिक मूल्यों, परंपराओं और भारतीय रीति–रिवाजों की शिक्षा दी जाती थी। हालाँकि पिछले दो दशकों में भारतीय सामाजिक स्थिति में आमूल–चूल परिवर्तन आया है। संयुक्त परिवारों से एकल–अभिभावक या निःसंतान परिवारों की ओर अचानक बदलाव आया है। किसी जमाने में, एक दंपत्ति के कम से कम दस से बारह बच्चे होते थे। इसके अलावा चाची, चाचा, मौसी, चचेरे भाई–बहन और भाई–बहनों के परिवार भी होते थे। इसके अलावा, आगंतुक और मेहमान भी आते थे। लेकिन सभी का व्यवहार अच्छा था। गौरी–गणपति समेत सभी त्योहार एक साथ मनाए जाते थे।

समय के साथ, परिवार के कमाने वाले सदस्य के लिए वित्तीय, सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों को निभाना मुश्किल होता गया। जी हाँ, ग्रामीण क्षेत्रों में पारिवारिक व्यवस्था अभी भी बहुत हद तक विद्यमान है। खासकर, संयुक्त परिवार व्यवस्था अभी भी कुछ हद तक ग्रामीण इलाकों में देखी जाती है। हालाँकि शहरी इलाकों में एकल परिवार व्यवस्था अधिक प्रचलित है। एक भारतीय संयुक्त परिवार में तीन से चार पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं। इसमें दादा–दादी, माता–पिता, चाचा–चाची, भतीजे–भतीजियाँ शामिल होते हैं, जो सभी एक ही घर में साथ रहते हैं, एक ही रसोई का इस्तेमाल करते हैं और अक्सर एक ही पैसे से खर्च करते हैं। घर और परिवार का खर्च सभी लोग मिलकर उठाते हैं और परिवार के फैसले सामूहिक रूप से लिए जाते हैं। संयुक्त परिवार व्यवस्था में परिवार के सदस्य एक–दूसरे को आर्थिक, सामाजिक और भावनात्मक सहारा देते हैं।

संयुक्त परिवार में दो या तीन पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं। इसलिए छोटे बच्चों को अपने माता–पिता, दादा–दादी, और चाचा–चाची का प्यार, और स्नेह मिलता था। दादा–दादी अपने पोते–पोतियों से इतने स्नेही होते थे कि उन्हें इस बात की जरा भी परवाह नहीं होती थी कि कोई उन पर बोल रहा है या चिल्ला रहा है। बच्चों को अच्छे–बुरे का ज्ञान न केवल अपने माता–पिता से मिलता था, बल्कि अपने दादा–दादी, चाचा–चाची से भी मिलता था। भाई–बहनों में प्रेम और स्नेह से नाचने, खेलने, साथ मिलकर काम करने और जितना हो सके उतना काम करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति विकसित और संरक्षित होती थी। बच्चे निश्चिंत, उन्मुक्त जीवन जीते थे। कोई चिंता, कोई तनाव, कोई टेंशन नहीं थी। आज के बच्चों को ऐसा जीवन जीने का अवसर नहीं मिलता। परिवार में कोई भी हो, परिवार का मुखिया उनकी जरूरतों को पूरा करने और उनकी समस्याओं का समाधान करने के लिए जिम्मेदार होता था। अगर परिवार पर कोई विपत्ति आती, कोई गंभीर समस्या आती तो संयुक्त परिवार में सभी का कर्तव्य था कि वे एकजुट होकर उस स्थिति का सामना करें। इसलिए किसी पर कोई दबाव नहीं था। सभी एक साथ रहते थे। पारिवारिक एकता आपसी रिश्तों के बंधनों से मजबूती से बंधी थी। इसलिए उनमें प्रेम, स्नेह, एक–दूसरे के प्रति चिंता और सद्भावना की भावना भी उतनी ही प्रबल थी। परिवार में कई मामले होते थे। सभी की अलग–अलग जिम्मेदारियाँ होती थीं। चूँकि ऐसी व्यवस्थित व्यवस्था मौजूद है, इसलिए संयुक्त परिवार प्रणाली परिवार के लिए लाभदायक है।

आज समय के साथ परिस्थितियाँ इतनी तेजी से बदल रही हैं कि सभी के अपने आचार–विचार, रीति–रिवाज, व्यवहार हैं और इसलिए अलग–अलग राय है। अगर हम संयुक्त परिवार में रहना चाहते हैं, तो कुछ प्रतिबंध, कर्तव्य, अनुशासन, जिम्मेदारी और परिवार की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि वे साथ मिलकर काम करें, घुल–मिलें और सबके साथ तालमेल बिठाएँ। आज लोग ऐसी पाबंदियाँ नहीं चाहते। इसलिए संयुक्त परिवार प्रणाली समाप्त हो गई है और विभाजित परिवार प्रणाली ने समाज में अपनी जड़ें जमा ली हैं। यह तरीका वर्तमान बदलते समय में उपयुक्त है... इस अलग हुए परिवार के प्रत्येक सदस्य की यही राय है। पहले, कम से कम एक जोड़ा 'हम दो, हमारे दो' कहकर कम से कम दो बच्चे पैदा करता था। एक अलिखित नियम था कि एक भाई की एक बहन या एक बहन का एक भाई होना चाहिए। अब तो हालात ये हैं– 'हम दो, हमारे एक'। कुछ जोड़े शादी के बाद भी बच्चे पैदा नहीं करते, क्योंकि वे जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते। अलग होने के बाद, सिंगल, अब बिना शादी किए 'लिव–इन' में रहने का चलन है...।

घटती पारिवारिक व्यवस्था के कारणों की खोज की जा रही है। शहरीकरण और औद्योगीकरण इसके प्रमुख कारण हैं। नौकरियों की तलाश में गाँवों से शहरों की ओर पलायन संयुक्त परिवारों को एकल परिवारों में बदल रहा है। शहरों में जगह की कमी और जीवनशैली में बदलाव ने साथ रहना मुश्किल बना दिया है। पश्चिमी सँस्कृति का प्रभाव भी एक बड़ा कारण है। पश्चिमी देशों में एकल परिवार व्यवस्था भारतीयों को प्रभावित कर रही है। इस कारण से संयुक्त परिवारों से दूर जाने का चलन बढ़ रहा है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता और व्यक्तिवाद को अधिक महत्व दिया जा रहा है। एक ही घर में अधिक सदस्य होने पर आर्थिक तनाव बढ़ जाता है। एकल परिवारों के कारण खर्चे बंट जाते हैं। प्रत्येक सदस्य को अपनी जरूरतों

को पूरा करने के लिए अधिक स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है, जो संयुक्त परिवार में संभव नहीं है। संयुक्त परिवार के सदस्यों के बीच बढ़ते मतभेदों और गलतफहमियों के कारण अलग होने का फैसला लिया जाता है। निजी जीवन और अपनी प्राथमिकताओं को अधिक महत्व दिया जा रहा है, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक सहयोग कम होता जा रहा है। लोगों को संयुक्त परिवार की ओर वापस लाने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने परिवार प्रबोधन कार्यक्रम चलाया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 6 गतिविधियों में 'कुटुम्ब प्रबोधन' एक प्रमुख गतिविधि है। संयुक्त परिवार, संगठित परिवार, सुरक्षित परिवार, सम्पन्न परिवार, व्यवस्थित परिवार, आनंदित परिवार, सुस्वास्थ्य परिवार आदि प्रमुख विषय कुटुम्ब प्रबोधन का प्रमुख लक्ष्य है। वर्तमान समय में अनेक परिवारों में अनेक विकृति, भारतीय सँस्कृति, परम्परा, एकल परिवार, पश्चिमी सँस्कार हावी होने पर सुरक्षित, सुन्दर, शान्त परिवार टूट रहे हैं। अनेक समस्याएँ दिखाई दे रही हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस विषय को ध्यानपूर्वक गतिविधि के द्वारा प्रबोधन करने की योजना से देश भर में सामूहिक प्रबोधन कार्य हो रहे हैं। भविष्य की युवा पीढ़ी को भी सही दिशा, मार्गदर्शन मिले, परिवार–स्वजन में भी सँस्कार, व्यवहार, श्रद्धा, सम्मान बना रहे, परिवार टूटे नहीं यही इसका उद्देश्य है।

वर्तमान में परिवार, कुटुम्ब को साथ लेकर चलना, रहन–सहन, भोजन, कार्यक्रम, मार्गदर्शन, सम्मान, आध्यात्मिक –धार्मिक कार्य आदि अनेक कार्य संयुक्त परिवार में मिलकर करना कठिन दिखाई देता है। समय प्रबन्ध, व्यवस्था, परिवार में सँख्या कम होना, विभिन्न व्यवसाय, नौकरी आदि के कारण भी समस्या होती है। सभी के साथ समन्वय, सम्पर्क के साथ संयुक्त रूप से कुछ कार्य, परिवार, कुटुम्ब मिल कर करें, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा–सुमन आदि से परिवार सम्पन्न, खुशी, आनंदित, भारतीय सँस्कृति आदि, भी संरक्षण–संवर्द्धन होता है। समय–समय पर कुटुम्ब प्रबोधन वर्तमान समय की मांग है।

हम फिर से अपने मूल की ओर यानि संयुक्त कुटुंब की ओर जा सकते हैं। इस समय मुझे कवि – विनोद कुमार शुक्ल इनकी 'जो मेरे घर कभी नहीं आएँगे' इस कविता की याद आती है–

जो मेरे घर कभी नहीं आएँगे
मैं उनसे मिलने
उनके पास चला जाऊँगा।
एक उफनती नदी कभी नहीं आएगी मेरे घर
नदी जैसे लोगों से मिलने
नदी किनारे जाऊँगा
कुछ तैरूँगा और डूब जाऊँगा
पहाड़, टीले, चट्टानें, तालाब
असंख्य पेड़ खेत
कभी नहीं आएँगे मेरे घर
खेत–खलिहानों जैसे लोगों से मिलने
गाँव–गाँव, जंगल–गलियाँ जाऊँगा।
जो लगातार काम में लगे हैं
मैं फुरसत से नहीं
उनसे एक जरूरी काम की तरह
मिलता रहूँगा–
इसे मैं अकेली आखिरी इच्छा की तरह
सबसे पहली इच्छा रखना चाहूँगा।

बस कुछ इसी तरह घर से निकलकर मिलने जाने के लिए निकलना होगा....।

अशोकनगर जिले की खंड और मोहल्ला समितियों में विहिप स्थापना दिवस कार्यक्रम आयोजित

विश्व हिंदू परिषद स्थापना दिवस कार्यक्रम प्रत्येक खंड और मोहल्लों में किए जा रहे हैं। बाल्मिकी मंदिर में स्थापना दिवस कार्यक्रम रखा गया, जिसमें बाल्मिकी समाज के अध्यक्ष राकेश बालू ने हिंदू समाज की रक्षा का संकल्प दिलवाया। विश्व हिंदू परिषद के प्रांत धर्मप्रसार प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा ने कहा कि हमें पंच परिवर्तन अपनाना होगा, तब समाज में परिवर्तन आएगा। श्री तार वाले बालाजी मंदिर मोहल्ला समिति शिवाजी खंड में विश्व हिंदू परिषद् का 61वाँ स्थापना दिवस कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

स्थापना दिवस श्री कृष्ण जन्माष्टमी साप्ताहिक कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में प्रांत अर्चक मठ मंदिर प्रमुख सम्माननीय डॉ. दीपक मिश्रा जी ने संगठन के 61 साल शुरुआत से लेकर आज तक की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अयोध्या में भगवान श्री राम का

भव्य मंदिर, धर्मांतरण, गौमाता की रक्षा, हिन्दू बहिन–बेटियों की रक्षा हेतु संगठन संकल्पित है। हिंदू समाज को भी संगठित होकर विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल के कंधे से कंधा मिलाकर संकट के समय साथ देना चाहिए, तभी हम अपने परिवार को और आने वाली पीढ़ी को बचा पाएंगे। इसके पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशोक् रघुवंशी ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया और समापन मंत्र के साथ समापन भी किया। अंत में सामूहिक श्री हनुमान चालीसा के पाठ और संगठन के जयघोष के साथ कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

deepakmishravhp@gmail.com

आज का पीडीए फॉर्मूला 1923 के अमानवीय कृत्य जैसा, लाल इश्तिहार–हिंदुओं का पतन

दिव्य अग्रवाल

मुस्लिम गठजोड़, दलित हिंदुओं का धर्मांतरण एवं हिंदुओं की हत्या यह देश के विभाजन से पहले भी हुआ, उसी PDA फार्मूले का क्रियान्वन सत्ता पाने हेतु इंडी गठबंधन करने को तत्पर है। जिसको समझने के लिए गाँधी जी की काँग्रेस और मुस्लिम लीग की आक्रामकता दोनों पर चर्चा आवश्यक है। एक तरफ मुस्लिम लीग जो द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात अमेरिकी सेना के शस्त्रों को भारी मात्रा में क्रय कर मुस्लिमों को आक्रामकता हेतु प्रेरित कर रही थी, तो भय से ग्रसित हिंदू समाज काँग्रेस को अपना प्रतिनिधित्व सौंप चुका था, जिसमें काँग्रेस हिंदुओं को अहिंसा का पाठ पढ़ा कर उन्हें कुंठित कर रही थी जबकि मुस्लिम समाज कोलकाता, टिपड़ा, गढ़ मुक्तेश्वर, हजारा, रावलपिंडी, गुरुग्राम आदि क्षेत्रों में हिंदुओं का नरसंहार कर रहा था और काँग्रेसी हिंदू असहाय होकर मृत्यु को प्राप्त होने को मजबूर थे। लेकिन क्षेत्रीय स्तर पर कुछ हिंदू संगठन थे, जिन्होंने अपनी रोटी–सब्जी में भी कटौती कर शस्त्र एकत्रीकरण का कार्य किया था, जिनसे वे अपने क्षेत्रों में काफी हद तक इस नरसंहार को रोक पाए।

1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना के पश्चात 'लाल इश्तिहार' के पर्चों का वितरण हुआ, जिसमें लिखा था दलित हिंदुओं से कुछ मत खरीदो, उन्हें काम पर मत रखो, दलित हिन्दू जब भूखे मरेंगे तो शीघ्र ही मुसलमान बन जायेंगे और जो हिंदू मुसलमान नहीं बनेंगे, उन्हें नरक भेज देंगे। मुस्लिम लीग कहती थी कि जो अछूत हिंदू हैं, उन्हें इस्लाम में मिलाएंगे, इसलिए उन हिंदुओं के साथ स्कूल में मत पढ़ो, उनके द्वारा निर्मित किसी भी वस्तु को मत छुओ। सोचिए! इस्लाम में हिंदुओं के एक समाज के प्रति इतनी घृणा की, उन्हें अछूत मानकर उन्हें छूना तक मना था।

1923 में हिंदुओं की जनसँख्या 21 करोड़ थी, जिसमें मुस्लिम लीग 7 करोड़ दलित हिंदुओं को अछूत मानती थी और उनका उद्देश्य उन्हें इस्लाम में परिवर्तित करना था। मुस्लिम लीग मानती थी कि यदि ये 7 करोड़ दलित हिन्दू इस्लाम में आ गए, तो हम 7 करोड़ मुसलमान मिलकर हिंदुओं के बराबर हो जायेंगे और समूचे भारत भू भाग में इस्लामिक शासन घोषित करेंगे। इस इस्लामिक मतांतरण और आक्रामकता से जगह–जगह दंगे आरम्भ हुए, मौलाना मोहम्मद अली (खिलाफत आंदोलन का मुख्य सूत्रधार) जिसको काँग्रेस का अध्यक्ष भी बनाया, उसने जगह–जगह कहना शुरू किया कि हे मुस्लिमों! यदि तुम व्यभिचारी और पतित भी हो, तो भी गाँधी और अन्य हिंदुओं से श्रेष्ठ हो।

काँग्रेस में मुस्लिम चाटुकारिता इतनी बढ़ गई थी कि जो जितना कट्टर मुसलमान वह उतना बड़ा नेता, जिसके चलते खिलाफत जैसे नरसंहार करवाने वाले कट्टर इस्लामिक नेता जैसे अबुल कलाम आजाद, मुहम्मद अली, एम ए अंसारी, हकीम अजमल तक को काँग्रेस ने समय–समय पर अपना अध्यक्ष तक मनोनीत किया। काँग्रेस ने सत्ता पाने की लालसा में मुस्लिम श्रेष्ठता जैसे शब्द को भी स्वीकार किया, जिसके चलते दिल्ली, अमेठी, संभल, शाहजहांपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, जबलपुर, नागपुर आदि में मुस्लिमों द्वारा की गई हिंदुओं की निर्मम हत्या पर भी काँग्रेस मौन ही रही।

जिन्ना जो कि यह समझ चुका था कि काँग्रेस सत्ता पाने के लिए हिंदू हितों का बलिदान करने को तत्पर है, उसने खिलाफत आंदोलन के नेताओं को अपने में समाहित करना आरम्भ कर दिया। परिणाम हिन्दू भुगत रहा था। बाराबंकी और बरेली में तो भगवान की कथा और होली पर रंग डालना तक इस्लामिक ताकतों ने बंद करवा दिया था। महर्षि दयानंद की सत्यार्थ प्रकाश भी प्रतिबंधित कर दी गई।

इस्लामिक समाज की आक्रामकता डायरेक्ट एक्शन डे पर कहर बनकर हिंदुओं पर टूटी। मुंबई, बंगाल में भयंकर रक्तपात किया गया, न जाने कितनी ही द्रौपदियों का चीरहरण हुआ, न जाने

कितनी ही पद्यमावती का जौहर हुआ। असँख्य हिंदू महिलाओं का सड़कों पर सामूहिक बलात्कार कर हत्या कर दी गई। लगभग 20 लाख से ज्यादा हिंदू जिनमें दलित हिन्दू समाज की अधिकतम सँख्या थी, इस्लामिक जिहाद द्वारा दुर्गति को प्राप्त हुई।

बिहार, जहाँ हिंदुओं ने सशस्त्र मुकाबला किया, वहाँ हिंदुओं का नुकसान कम हुआ, लेकिन अंततः काँग्रेस की इस्लामिक श्रेष्ठता और सत्ता पाने के लालच में नुकसान सिर्फ हिंदुओं का हुआ। मुसलमानों को पाकिस्तान भी मिला और काँग्रेस ने सत्ता पाने के साथ–साथ भविष्य का वोट बैंक निर्मित करने हेतु मुसलमानों की बहुत बड़ी सँख्या को हिंदुस्तान में ही रोक लिया, जिसका दलित हिन्दू समाज के सर्वश्रेष्ठ नेता एवं संविधान निर्माता बाबा साहेब ने जमकर विरोध किया, उनका मानना था कि यदि अब एक भी मुसलमान भारत में रोका गया, तो पुनः वह समय आएगा जब हिंदू समाज और राष्ट्र को मजहबी जिहाद की चुनौती का सामना करना पड़ेगा। इसलिए बाबा साहेब ने संविधान में भारत को कभी धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी राष्ट्र की संज्ञा नहीं दी।

काँग्रेस की इस्लामिक श्रेष्ठता और सत्ता पाने के लालच में नुकसान सिर्फ हिंदुओं का हुआ। मुसलमानों को पाकिस्तान भी मिला और काँग्रेस ने सत्ता पाने के साथ–साथ भविष्य का वोट बैंक निर्मित करने हेतु मुसलमानों की बहुत बड़ी सँख्या को हिंदुस्तान में ही रोक लिया, जिसका दलित हिन्दू समाज के सर्वश्रेष्ठ नेता एवं संविधान निर्माता बाबा साहेब ने जमकर विरोध किया, उनका मानना था कि यदि अब एक भी मुसलमान भारत में रोका गया, पुनः वह समय आएगा, जब हिंदू समाज और राष्ट्र को मजहबी जिहाद की चुनौती का सामना करना पड़ेगा। इसलिए बाबा साहेब ने संविधान में भारत को कभी धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी राष्ट्र की संज्ञा नहीं दी।

अब भारत के हिंदुओं को सोचना चाहिए कि काँग्रेस और उसके साथी, तब भी हिंदुओं के दुश्मन थे और आज भी, इंडी गठबंधन का PDA फॉर्मूला है, उसमें दलित हिन्दू समाज के लोगों को भ्रमित कर सत्ता पाना चाहते हैं, जबकि प्रतिदिन कोई न कोई घटना निरंतर ऐसी हो रही है, जिसमें दलित हिन्दू समाज का उत्पीड़न मजहबियों द्वारा किया जाता है, पर इंडी गठबंधन और उसका PDA फॉर्मूला मुस्लिमों के विरुद्ध कुछ नहीं बोल पाता। इसलिए इतिहास से भविष्य का आंकलन करना आवश्यक है।

divyelekh@gmail.com

अखण्ड भारत दिवस मनाया गया

विश्व हिन्दू परिषद् एवं बजरंग दल झुन्झुनूँ गाँधी चौक, ताल बाजार में बजरंग दल जिला संयोजक सुशील प्रजापति के नेतृत्व में अखण्ड भारत का चित्र बनाकर अखण्ड भारत दिवस मनाया गया। सुशील प्रजापति ने बताया कि महाभारत काल के बाद से भी समझें, तो ध्यान में आता है कि उस समय भी इस भू भाग पर सिर्फ हिन्दू ही रहता था और सम्पूर्ण पृथ्वी का जब जल और थल इन दो तत्वों में वर्गीकरण करते हैं, तब सात द्वीप एवं सात महासमुद्र माने जाते हैं। हम इसमें से प्राचीन नाम जम्बूद्वीप जिसे आज एशिया द्वीप कहते हैं तथा हिन्दू सरोवरम् जिसे आज हिन्दू महासागर कहते हैं, के निवासी हैं। इस जम्बूद्वीप (एशिया) के लगभग मध्य में हिमालय पर्वत स्थित है। हिमालय पर्वत में विश्व की सर्वाधिक ऊँची चोटी सागरमाथा, गौरीशंकर है, जिसे 1835 में अँग्रेज शासकों ने एवरेस्ट नाम देकर इसकी प्राचीनता व पहचान को बदलने का कूटनीतिक षडयंत्र रचा। इसका एकमेव मार्ग है संगठित, सशक्त,

आक्रामक राष्ट्रभक्त और सक्रिय हिन्दू समाज निर्माण करना। देश में राष्ट्रीय अखंडता, सहिष्णुता की एकमेव गारंटी हिन्दू है और भारत में संविधान जिंदा है, तो केवल हिन्दू के कारण है। हम स्वातंत्र्य समर के हुतात्माओं के साथ–साथ अपनी मातृभूमि के उस भाग का भी स्मरण कर, उसे नमन करें, जो 14 अगस्त 1947 से हमारे लिए पराया हो गया है। पर्दाफाश करें देश के बंटवारे के अपराधी तथा विश्वासघाती विचारधारा के पोषकतत्वों का, जिससे आगे के काल में ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना की पुनरावृत्ति को रोका जा सके। प्रांत परियोजना सह प्रमुख योगेन्द्र कुण्डलवाल ने अखण्ड भारत के 14वी–15वीं शताब्दी में चंपा, कंबोडिया, 1800 में जावा, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, 1876 में अफगानिस्थान, गंधार, 1904 में नेपाल, 1906 में भूटान, 1914 में तिब्बत, 1935 में श्रीलंका, 1937 में बर्मा, 1947 में पाकिस्तान एवं बाँग्लादेश धर्म के नाम पर अलग हो गये। अब हिन्दुओं को जाति एवं भाषा के नाम पर बाँटकर भारत को तोड़ने की साजिश रची जा रही है।

ट्रम्प का टैरिफ नहीं रोक पाएगा भारत को

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

भारत पर लम्बे समय तक प्रतिबंध लगाकर देख चुका है अमेरिका। अमेरिकन प्रतिबंधों के बाद भी हम तेजी से आगे बढ़े थे। अटल जी की सरकार ने जब परमाणु परिक्षण किया, तब अमेरिका और उसके सभी समर्थक देशों ने हम पर अनेकानेक आर्थिक प्रतिबंध लगाया था, दशकों तक। कुछ प्रतिबंध तो अभी इधर के साल–दो साल में हटे हैं। लेकिन हम तब भी रूके नहीं। आगे भी नहीं रूकेंगे। हम तेजी से आगे बढ़ते जाएंगे। हमारा विकास रथ रोक सके, यह सामर्थ्य अमेरिका के पास नहीं है। हमारी आर्थिक संरचना केवल बाजार आधारित नहीं है। हमारी आर्थिक संरचना मृत्युंजयी है, जिसको रोकना किसी के भी बस की बात नहीं है।

अमेरिका अपनी डुबती हुई अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए तीन बार तो अपनी क्रेडिट लिमिट बिल लाकर बढ़ा चुका है। कर्ज का भार बहुत अधिक है उसपर। बहुत सारे देशों से परमानेंट ट्रेजरी बांड खरीदवाया है अमेरिका ने। वो देश अब बांड रिन्यू करने की इच्छा नहीं रखते। उनमें भारत भी है। भारत ने अमेरिका के ट्रेजरी बांड में अबतक कुल $ 242 बिलियन का निवेश किया है।

जापान $ 1.11 ट्रिलियन के साथ पहले स्थान पर, चीन $ 780.2 बिलियन के साथ दूसरे स्थान पर, इंग्लैंड $ 741.5 बिलियन के साथ तीसरे स्थान पर, लक्जमबर्ग $ 384.2 बिलियन के साथ चौथे स्थान पर है और भारत का इस मामले में $ 242 बिलियन के साथ 12वां स्थान है। अब यह बांड वाला पैसा अमेरिका को सभी देशों को वापस करना पड़ेगा। इससे अमेरिकन इकोनॉमी हिल जायेगी। उसी पैसे का जुगाड़ करने के लिए ये अमेरिकी लोग टैरिफ का खेल खेल रहे हैं। इससे अमेरिका खुद ही डुबेगा।

हथियारों का सौदागर है अमेरिका

हथियार बेंचने की फिराक में न जाने कितने देशों को खंडहर बनाया है अमेरिका ने। लेकिन ऑपरेशन सिंदूर के बाद हथियारों के बाजार में भी अमेरिकन साख टुटा है। अब यह बाजार भी उसका धीमा पड़ेगा। कैराना हिल्स में स्थित सरगोधा न्यूक्लियर फैसिलिटी और नूर खान एयर बेस की न्यूक्लियर फैसिलिटी पर भारत के प्रहार से अमेरिकन घमंड चूर–चूर हो गया। उसके राडार, एयर डिफेंस सिस्टम, एफ 16, मिसाइल सब धरे रह गए। उसके न्यूक्लियर वैज्ञानिकों समेत डिफेंस एक्सपर्ट्स, तकनीशियन्स और वैज्ञानिकों सब की बुद्धि पर ब्रह्मोस का वज्र पड़ गया।

इरान पर हमले के बाद जल्दी युद्ध छोड़कर भागा अमेरिका। क्योंकि अप्रत्यक्ष रूप से भारत और प्रत्यक्ष रूप से रसिया इरान के साथ खड़े थे। इजरायल के विरोध में नहीं, अमेरिका को उसकी सामर्थ्य बताने के लिए। इरान के लोग केला खाते नहीं, और उस समय भारत से बहुत से सीपमेंट्स केलों से लदे हुए इरान भेजे गए थे, केले ही सेटेलाइट पिक्चर्स में आए अमेरिकन एजेंसियों को। शेष आप स्वयं समझें।

देशों को बर्बाद करने की अमेरिकन मूर्खता का ताजा उदाहरण यूक्रेन का है। अपनी इंटेलिजेंस एजेंसियों के माध्यम से एक जोकर को वहाँ का राष्ट्रपति बनवा दिया। उस जोकर के माध्यम से अमेरिका ने रसिया का ब्लैक सी से होने वाला व्यापार रोकने की कोशिश की। मतलब रसिया को अप्रत्यक्ष रूप से बर्बाद करने की कोशिश की अमेरिका ने। ज्ञात हो कि रसिया का 80 प्रतिशत व्यापार ब्लैक सी से होकर सम्पन्न होता है। अमेरिका की यह मूर्खता रसिया के अस्तित्व पर संकट बनने लगा था। रसिया ने बहुत वर्षों तक टर्की के सहारे ब्लैक सी से होते हुए अपना व्यापार जारी रखा। यूक्रेन के तटीय क्षेत्र में अमेरिका प्रायोजित अड़ंगा लगाये जाने से रसिया ने बहुत वर्षों तक कठिनाईयों का सामना किया। अंत में तंग आकर उसने यूक्रेन पर हमला किया।

अमेरिकन्स इतने स्वार्थी और

संवेदनहीन हैं कि उनको केवल अपना ही हित दिखता है। अपने हित साधन में ये अमेरिकी लोग दूसरे देशों को पूरी तरह बर्बाद कर देने की नीचता तक उतर जाते हैं। ऐसी सभी चालबाजियाँ रोज कहीं न कहीं दिखाते हैं ये अमेरिकी। अमेरिका इतना स्वार्थी राष्ट्र है कि वह अपने अतिरिक्त किसी भी देश के साथ नहीं है। कभी भी उसे सिर्फ अपना ही भला देखना होता है। पाकिस्तान को बनवाने के पीछे भी इस का हाथ रहा है। कहीं भी लोकतांत्रिक सरकार इसे पसंद ही नहीं, लोकतांत्रिक ढंग से चुनी हुई सरकारें गिरा कर येन केन प्रकरेण अपनी पिट्ठू सरकारें बनवा कर वहाँ आतंकवाद की बढ़ावा देने का कार्य अमेरिका ही करता है।

अपनी ऐसी ही षड्यंत्रकारी मानसिकता के कारण इन अमेरिकी लोगों ने अभी–अभी बाँग्लादेश को बर्बाद कर दिया। म्यांमार को बर्बाद कर दिया। अफगानिस्तान तो इनका ही बर्बाद किया हुआ है। सीरिया जैसे कितने ही देशों को बर्बाद कर दिया। इराक को बर्बाद कर दिया। अफ्रिकी देशों के विकसीत न होने देने के पीछे अमेरिका और उसके सहयोगी देशों का ही हाथ है। एशिया में भी कम बर्बादी नहीं किया है अमेरिका ने। सोवियत संघ को तोड़ने का काम अमेरिका ने किया, यह जग जाहिर है। भारत की विकास गति धीमी करने का काम अमेरिका ने किया। इसके लिए पाकिस्तान का पिछले दरवाजे से समर्थन करता रहा अमेरिका।

वस्तुतः पाकिस्तान की आईएसआई अमेरिका के सीआईए का ही एक अघोषित विंग है और अमेरिकी एस्टेब्लिशमेंट ही भारत के खिलाफ आईएसआई का उपयोग करता रहा है। इसके साथ ही आईएसआई एवं सीआईए के स्लीपर सेल भारत में गहरे पैठ बनाए हुए हैं। इसमें इस देश की स्वयंभू बुद्धिजीवियों की फौज, पत्रकारों की एक बड़ी जमात, न्यायिक व्यवस्था में बैठे कई प्रकार के बड़े नाम, कई प्रकार के प्रतिष्ठित संस्थानों में लंबे समय से अपनी मजबूत पकड़ बनाए कई नामी गिरामी लोग शामिल हैं। अतः अभी भारत की राह बहुत आसान नहीं है। हमें बहुत अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। सावधानीपूर्वक कदम बढ़ाने की आवश्यकता है।

कारगिल के युद्ध में बहुत हथियार जो पाकिस्तानी घुसपैठियों और पाकिस्तान की सेना से भारत की सेना ने जब्त किया था, वो अमेरिकी हथियार थे।

अमेरिका कारगिल के घुसपैठियों को पाकिस्तानी सेना के रूप में मानने से इंकार करता रहा, लम्बे समय तक। लेकिन जब उन कबाइली वेष में पकड़े गए और मारे गए पाकिस्तानी सैनिकों के पाकिस्तानी प्रमाणपत्र और अन्य प्रमाण प्रस्तुत किया गया, तब अमेरिका ने माना कि यह पाकिस्तान की सेना द्वारा किया गया घुसपैठ है।

उनसे जब्त किए गए अमेरिकी हथियारों का प्रमाण दिए जाने पर भी इन अमेरिकियों ने यह मानने से इंकार किया और हथियारों की तस्करी की थ्योरी गढ़ने लग गए। ताजा घटनाक्रमों को ध्यान में रखकर अनेक युवा कहने लग गए हैं कि भविष्य में भी अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए अमेरिका के साथ कोई डील नहीं करना चाहिए, यह रंग बदलने वाला देश है। लेकिन आप अंतरराष्ट्रीय राजनीति में किसी का भी स्थाई बायकॉट नहीं कर सकते। समझौता और डील करना चाहिए, लेकिन अपनी शर्तों के साथ दूसरों की बात मानना होता है। डील भी एकतरफा तो होता नहीं है।

आज के दिन अमेरिका से जो व्यापार है, उसमें भारत उसपर निर्भर नहीं है, नहीं तो अमेरिका के आगे घुटने टेकना पड़ता भारत को, मोदी जी को शर्मिंदा होना पड़ता और विपक्ष धज्जियाँ उड़ा देता। कहने का अर्थ है कि अमेरिका के साथ कभी भी न निर्भर रहना है ना कभी भी पूर्ण विश्वास करना होगा।

आज अमेरिका बहुत सारे विषयों के संदर्भ में हमपर निर्भर है। हम उसपर निर्भर नहीं हैं। उसकी मजबूरी है हमसे व्यापारिक सम्बन्ध बनाए रखना। सुरक्षा और सामरिक संदर्भ में भी वह हम पर निर्भर है। क्वाड में तो हमारे बिना अमेरिका कुछ कर ही नहीं सकता। भारत ही क्वाड का केंद्र बिन्दु है।

इन अमेरिकियों को पुरा यूरोप डफर कहता है। ये होते ही हैं नम्बर एक के स्वार्थी। खुद का मतलब पूरा करो और बाकियों को दुल्लती मारो। जिस देश से स्वार्थ साधा, उसको भी नष्ट करो, यही इनकी नीति है। लेकिन अब यह सब भारत के संदर्भ में नहीं चलेगा। अमेरिका का दम फुलने में अब बहुत समय नहीं लगने वाला है।

murari.shukla@gmail.com

विकराल होते आनलाइन गेम पर नियंत्रण का कानून सराहनीय

ललित गर्ग

इंटरनेट के विस्तार ने आधुनिक दौर में जीवन को अनेक सुविधाएँ दी हैं, लेकिन इसके साथ ही कुछ नए गंभीर संकट भी पैदा किए हैं। इनमें सबसे गंभीर संकटों में से एक है ऑनलाइन गेमिंग, या, कहें तो मनी गेमिंग की बढ़ती लत। यह सच है कि गेमिंग मनोरंजन का साधन हो सकती है, पर जब इसमें धन का जुड़ाव होता है, तब यह सीधा–सीधा जुए एवं सट्टे के रूप में बदल जाती है। यह एक कड़वी सच्चाई है कि ऑनलाइन मनी गेमिंग यदि लत बन जाए, तो यह संपन्न व्यक्ति एवं परिवार को भी कंगाल कर सकती है। एक आँकड़े के अनुसार देश में एक साल में 45 करोड़ लोगों ने बीस हजार करोड़ गँवा दिये हैं। सब कुछ गँवा कर आत्महत्या करने के मामले भी प्रकाश में आते रहे हैं। सवाल इन लालच बेचने एवं जगाने वाली मनी गेमिंग की पारदर्शिता को लेकर भी उठते रहे हैं। इन्हीं चिंताओं एवं त्रासद विडम्बनाओं के बाद ऑनलाइन गेमिंग पर नियंत्रण का एक विधेयक भारत सरकार इसी मानसून सत्र में ऑनलाइन गेमिंग संवर्धन एवं विनियमन विधेयक 2025 लेकर आई है। जिसे अब गंभीर चर्चा के बिना संसद ने पारित भी कर दिया है। यह विधेयक पैसे से खेले जाने वाले किसी भी ऑनलाइन गेम को गैरकानूनी घोषित करता है। यह स्वागत योग्य कदम है, क्योंकि गेमिंग के नाम पर अरबों रुपए का लेन–देन और करोड़ों युवाओं की मानसिक शांति को नष्ट करने वाली प्रवृत्ति दिनोंदिन विकराल रूप ले रही है।

आज स्थिति यह है कि ऑनलाइन गेमिंग की लत केवल समय और धन की बर्बादी ही नहीं कर रही, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक रिश्तों में भी तनाव और विघटन का कारण बन रही है। स्कूल और कॉलेज के छात्र अपनी पढ़ाई की उपेक्षा कर इस आभासी दुनियाँ में डूबते जा रहे हैं। युवा वर्ग का एक बड़ा हिस्सा रात–दिन गेमिंग में डूबा रहता है, जिससे उनके व्यक्तित्व और भविष्य पर गहरा नकारात्मक असर पड़ रहा है। यह संकट केवल आर्थिक ही नहीं, मानसिक और सामाजिक भी है। दिन–रात स्क्रीन से चिपके रहने वाले युवक चिड़चिड़ापन, अवसाद और एकाकीपन का शिकार हो रहे हैं। उनमें हिंसक प्रवृत्तियाँ भी उभर रही हैं। कई ऐसी खबरें भी आ चुकी है, जिनमें लगातार आनलाइन गेम खेलते रहने से मना करने पर कोई किशोर हिंसक हो गया और उसने या तो आत्महत्या कर ली या फिर किसी की जान ले ली। ऑनलाइन गेमिंग से जुड़ी लत रिश्तों को तोड़ रही है, दोस्ती और पारिवारिक बंधनों को कमजोर कर रही है। एक पूरी पीढ़ी, जिसे राष्ट्रनिर्माण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए था, अपनी ऊर्जा और रचनात्मकता इस आभासी जुए में गँवा रही है।

सरकार के अनुसार, वह ई–स्पोर्ट्स और सोशल गेमिंग को बढ़ावा देने के लिये अवश्य उत्सुक है, जिसमें कोई वित्तीय जोखिम न हो। यहाँ उल्लेखनीय है कि ऑनलाइन गेमिंग का वार्षिक राजस्व 31,000 करोड़ रुपये से अधिक है। इसके साथ ही यह हर साल प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों के रूप में बीस हजार करोड़ रुपये से अधिक का योगदान देता है। लेकिन इसके साथ चिंता का विषय यह भी है कि सुनहरे सब्जबाग दिखाने वाले कई ऑनलाइन गेमिंग एप लत, खेलने वाले आम लोगों के आर्थिक नुकसान और मनी लॉन्ड्रिंग को भी बढ़ावा देते हैं। यही वजह है कि ऑनलाइन गेमिंग में अपनी जमा पूंजी लुटाने वाले बदकिस्मत उपयोगकर्ता नाकामी के बाद आत्महत्या तक करने को मजबूर हो जाते हैं। निस्संदेह सरकार ने राजस्व की परवाह न करते हुए ऑनलाइन मनी गेमिंग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाकर एक बड़ा जोखिम भी उठाया है। लेकिन सवाल यह भी है कि क्या केवल कानून से इस प्रवृत्ति पर अंकुश लग सकेगा ? इंटरनेट का विस्तृत दायरा और विदेशी ऑनलाइन ऑपरेटर विधेयक के प्रमुख उद्देश्यों को विफल करने की कोशिश कर सकते हैं।

यह नितांत अपेक्षित है कि वित्तीय प्रणालियों की अखंडता के साथ–साथ राष्ट्र की सुरक्षा और संप्रभुता की रक्षा होनी चाहिए। माना जा रहा है कि इस नये कानून को बनाने की जरूरत संभवतः छः हजार करोड़ रुपये वाले महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी घोटाले के बाद महसूस की गई। जिसकी जांच सीबीआई और ईडी कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ के कुछ शीर्ष राजनेताओं और नौकरशाहों पर सट्टेबाजी ऐप के यूएई स्थित प्रमोटरों के साथ संबंध होने के आरोप लगे हैं। जो कथित तौर पर हवाला कारोबार और विदेशों में धन–शोधन के कार्यों में लिप्त बताये जाते हैं।

भारत सरकार का यह कदम इसलिए भी जरूरी एवं प्रासंगिक है कि इस उद्योग का टर्नओवर कई आर्थिक, राष्ट्रीय एवं सामाजिक विसंगतियों के साथ कई हजार करोड़ तक पहुँच गया है। विदेशी कंपनियाँ भी इस क्षेत्र में सक्रिय होकर भारतीय युवाओं को लुभाने के लिए तरह–तरह के विज्ञापन और प्रलोभन दे रही हैं। इन मंचों पर जीतने के लालच में फंसकर युवा अपने उज्ज्वल भविष्य को दांव पर लगा रहे हैं। यह प्रवृत्ति केवल व्यक्तिगत जीवन नहीं बिगाड़ती, बल्कि राष्ट्र की प्रगति में भी बाधक है, क्योंकि जिन युवाओं को शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और राष्ट्रनिर्माण में योगदान देना चाहिए, वे अपना समय और ऊर्जा इन आभासी खेलों में गँवा रहे हैं। आज जरूरत है कि ऑनलाइन गेमिंग की इस समस्या को केवल कानूनी दायरे में ही नहीं, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर भी गंभीरता से लिया जाए। अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों को समय पर समझाएँ, उनका मार्गदर्शन करें और उन्हें सकारात्मक गतिविधियों की ओर प्रेरित करें। समाज को भी मिलकर यह संकल्प लेना होगा कि मनोरंजन के नाम पर फैल रहे इस जुए की घातक एवं विध्वंसक सँस्कृति को बढ़ावा न दिया जाए।

यह ठीक है कि सरकार ने ऑनलाइन गेमिंग को नियंत्रित करने का प्रस्ताव पारित कर सही दिशा में सराहनीय कदम बढ़ाया है, लेकिन कानून से भी अधिक जरूरी है जागरूकता। जब तक लोग स्वयं यह नहीं समझेंगे कि गेमिंग का यह जुआ उनके भविष्य को तबाह कर रहा है, तब तक समस्या का समाधान संभव नहीं है। इसलिए अब समय आ गया है कि हम मनोरंजन के नाम पर चल रही इस प्रवृत्ति का पर्दाफाश करें और अपने युवाओं को सुरक्षित, रचनात्मक और सकारात्मक भविष्य की राह पर अग्रसर करें। असँख्य परिवारों को आज अपने बच्चों की इस आदत के कारण कर्ज और बर्बादी के अंधेरों में जाने से बचायें। खेल के नाम पर ऑनलाइन मंचों पर पैसा लगाना वस्तुतः सट्टेबाजी ही है, जिसमें जीत की संभावना क्षणिक होती है और हार की संभावना लगभग निश्चित। लाखों युवक अपने खून–पसीने की कमाई या माता–पिता की मेहनत की कमाई को इन कंपनियों की तिजोरियों में डाल रहे हैं। यह समस्या अब जुए की लत से भी अधिक खतरनाक हो चुकी है, क्योंकि इसमें तकनीक की चकाचौंध और आसानी से उपलब्धता ने युवाओं को पहले से ज्यादा असुरक्षित बना दिया है।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि ऑनलाइन गेमिंग का बाजार बीते कुछ वर्षों में तेजी से फैला है। विज्ञापनों, प्रलोभनों और चमकदार ऑफरों ने युवाओं को अपने शिकंजे में इस तरह जकड़ लिया है कि लाखों लोग इसमें डूबकर अपनी शिक्षा, कैरियर और परिवार तक को दांव पर लगा बैठे हैं। जब खेल केवल मनोरंजन तक सीमित रहता है, तब तक उसकी उपयोगिता है, पर जैसे ही इसमें धन और लालच का तत्त्व जुड़ता है, यह जुए में बदल जाता है। और यही वह बिंदु है, जहाँ से विनाश की शुरुआत होती है। सच्चाई यह है कि ऑनलाइन गेमिंग का जाल इतना व्यापक हो चुका है कि इसे रोकने के लिए कानून की सख्ती के साथ–साथ सामाजिक जागरूकता और पारिवारिक हस्तक्षेप भी उतने ही जरूरी हैं। ऑनलाइन मनी गेमिंग के सख्त नियमन और इसे भारी कराधान के अधीन लाना एक व्यावहारिक समाधान होगा। साथ ही पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर देकर उपभोक्ताओं के लिये सुरक्षा उपाय सुनिश्चित किए जाने की भी जरूरत है। इस अभियान में गैर–कानूनी गतिविधियों में लिप्त प्लेटफॉर्मों पर जुर्माना भी लगाना एवं बड़े–बड़े दावे करने वाली मशहूर हस्तियों पर कार्रवाई भी होते हुए दिखनी चाहिए, तभी यह कानून कारगर एवं प्रभावी बन पायेगा।

lalitgarg11@gmail.com

रोगचर्या

आयुर्वेद में व्यक्ति को शीघ्रता से निरोग करने के लिए ही नहीं, बल्कि आगे भी कभी उसे ऐसा कष्ट न हो, इसके लिए हितकर और अहितकर आहार–विहार बहुत विस्तार से बताया गया है। सामान्यतः इसे पथ्य–अपथ्य भी कहा जाता है। उपचार के लिए जितना महत्व औषधी का है, उतना ही आहार–विहार का भी, क्योंकि इसकी अनदेखी से रोग और भी बढ़ जाता है। पहले यह अमूल्य ज्ञान हमारी परम्परा का ही एक अभिन्न अंग था, किन्तु आज संयुक्त परिवार के बिखर जाने व अन्य अनेक कारणों से यह लुप्त हो रहा है। जनहित के लिए हम कुछ खास रोगों के लिए आवश्यक सावधानियों की जानकारी दे रहे हैं।

मधुमेह

रोग – सामान्यतः मधुमेह का कारण कफ और मेद (वसा) की विकृति है।

- ❖ धागे वाली मिश्री या गुड़, शक्कर आदि का सीमित मात्रा में प्रयागे करें। सफेद चीनी बहुत अधिक हानिकारक है। सिंथैटिक मीठा जैसे सैक्रीन की गोली या शुगर फ्री आदि चीनी का ही कैमिकल विकल्प हैं। इन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- ❖ गेहूँ में चने का आटा या बेसन मिला कर रोटी बनाएँ। काले चने, बेसन तथा बाजरे का उपयोग हितकर है।
- ❖ सलाद, ताजे या कम मीठे फल, सब्जियाँ प्रतिदिन नींबू छिडक कर खाएँ।
- ❖ योग, प्राणायाम, नियमित भ्रमण करें। आरामतलबी छोड़ें और सक्रिय रहें।
- ❖ भोजन तिल के शुद्ध तेल में बनाएँ। यह तेल मधुमेह के लिए रामबाण है।
- ❖ मीठा व नमक का सेवन कम करें। कटु तथा खट्टे का सेवन अधिक करें।
- ❖ चिन्ता छोड़कर जीवन का आनन्द लेने का प्रयत्न करें तथा खुश रहें।
- ❖ कोल्ड ड्रिंक्स, आइस्क्रीम, गुड़ और दही का सेवन न करें।
- ❖ भोजन के बाद कम से कम सौ कदम अवश्य चलें।
- ❖ मोटापा दूर करें, यह मधुमेह के लिए घातक है।
- ❖ चौलाई, मैथी की सब्जी, दाना मैथी, मखाना तथा तिल का उपयोग करें।
- ❖ आँवले का सेवन जूस, चूर्ण अथवा अँचार के रूप में करें।
- ❖ हल्दी को अँचार के रूप में अथवा घी में भून कर तैयार किए हुए लगभग चौथाई चम्मच चूर्ण को गर्म पानी अथवा दूध के साथ प्रयोग करें।

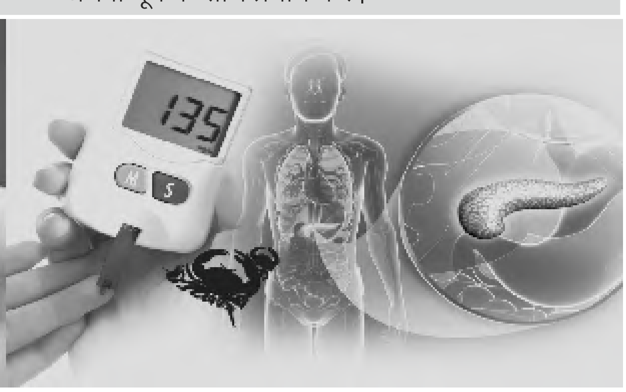

मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करें एवं अवैध धर्मांतरण पर तत्काल रोक लगाई जानी चाहिए : बजरंग लाल बांगड़ा

हल्द्वानी (विश्व हिन्दू परिषद) 23 अगस्त 2025। विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय महामंत्री बजरंग लाल बागड़ा ने आज आयोजित पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदू समाज के मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण समाप्त होना चाहिए। हिंदूजनों द्वारा अर्पित चढ़ावा हिंदू समाज के उत्थान, शिक्षा, सँस्कार और सेवा कार्यों में ही उपयोग होना चाहिए। मंदिर हिंदू समाज की आस्था के केंद्र हैं, अतः इनका संचालन भी समाज को ही करना चाहिए। उन्होंने बताया कि इस विषय पर अनेक राज्य सरकारों से वार्ता चल रही है और निकट भविष्य में इसके सकारात्मक परिणाम आने की प्रबल संभावना है।

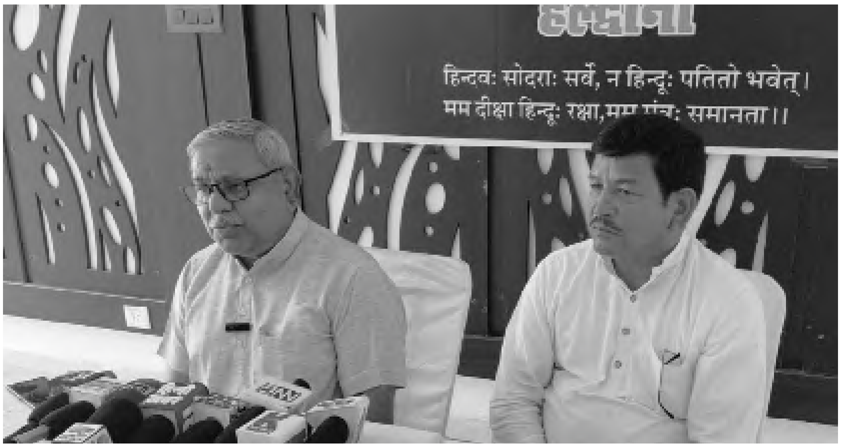

बजरंग लाल बागड़ा ने अवैध धर्मांतरण की बढ़ती घटनाओं पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि यह केवल धार्मिक समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक असंतुलन और राष्ट्रीय सुरक्षा से भी जुड़ा विषय है। उन्होंने उत्तराखंड सरकार द्वारा हाल ही में पुराने धर्मांतरण कानून में किए गए संशोधन की सराहना की और कहा कि सभी राज्य सरकारें मजबूत धर्मांतरण कानून बनाएँ, ताकि समाज में असंतुलन व विघटन की स्थिति उत्पन्न न हो। उत्तराखंड सरकार द्वारा अल्पसँख्यक शिक्षा बोर्ड का गठन किए जाने को भी स्वागत योग्य कदम बताया गया। साथ ही यह आग्रह रखा गया कि केवल वही सँस्थान अल्पसँख्यक घोषित हों, जिनमें न्यूनतम 50 प्रतिशत छात्र संबंधित अल्पसँख्यक समुदाय से हों। विश्व हिंदू परिषद ने स्पष्ट किया कि मंदिर प्रबंधन, अवैध धर्मांतरण, जनसँख्या असंतुलन और शिक्षा व्यवस्था जैसे विषय केवल धार्मिक नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की स्थिरता व सुरक्षा से जुड़े हुए मुद्दे हैं। विश्व हिन्दू परिषद ने सरकारों से ठोस कदम उठाने की अपील करते हुए हिंदू समाज को भी जागरूक और संगठित रहने का आह्वान किया है।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

47 परिवारों के 335 सदस्यों ने की स्वधर्म में वापसी

पटना जिला अंतर्गत बभनपुरा ग्राम में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा 47 परिवार से 335 सदस्यों ने स्वधर्म में पुनः निष्ठा व्यक्त की। यज्ञ में आहुति देकर व पंचामृत के द्वारा उनका शुद्धिकरण कराया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्व हिंदू परिषद पटना व गुवाहाटी क्षेत्र के धर्माचार्य सम्पर्क प्रमुख वीरेंद्र विमल जी ने कहा कि 'इसाई मिशनरियाँ लोभ, लालच देकर धर्मान्तरण करा रही हैं। छद्म वेष बनाकर तरह–तरह के प्रलोभन देकर, कहीं–कहीं हिंसा के बल से ये विदेशी शक्तियाँ हिन्दू समाज को तोड़ने का प्रयत्न कर रही हैं, लेकिन ये कभी सफल नहीं होंगे, क्योंकि हिन्दू समाज अब जाग चुका है। वह धर्मान्तरण का मुँहतोड़ जबाब दे रहा है। हमें सप्ताह में एक बार मन्दिर में सत्संग चलाकर अपने धर्म व सँस्कृति के प्रति लोगों को जागरूक करना है, अपने पर्व व त्योहार में स्व की अनुभूति जगानी है।

विश्व हिन्दू परिषद धर्मप्रसार के क्षेत्र प्रमुख श्री उपेन्द्र कुशवाहा ने स्वेच्छा से हिन्दू धर्म में पुनः वापस आए परिवारों को राम दरबार का चित्र देकर उन्हें सम्मानित किया। कार्यक्रम में विहिप के प्रान्त मंत्री सन्तोष सिसोदिया, सामाजिक समरसता के प्रांत सह प्रमुख सन्दीप कुमार, विनोद, शिवनन्दन, चंचल वर्णवाल सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

chitranjan1964@gmail.com

युवा वर्ग में कौशल विकास से सबल एवं स्वावलंबी बनेगा समाज : अजेय पारीक

राँची, 18 अगस्त 2025। विश्व हिंदू परिषद झारखंड सेवा विभाग ने बच्चों के कौशल विकास को ध्यान में रखते हुए आज कांके के होचर ग्राम स्थित नेताजी एकेडमी उच्च विद्यालय परिसर में सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मंत्री सह केंद्रीय सेवा प्रमुख अजेय पारीक, विश्व हिंदू परिषद (झारखंड–बिहार) के क्षेत्र मंत्री डॉ. बिरेन्द्र साहु, प्रांत संगठन मंत्री देवी सिंह, प्रांत सेवा प्रमुख अजय अग्रवाल ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलन कर किया।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री अजेय पारीक ने कहा कि युवा पीढ़ी देश का भविष्य होता है। युवा पीढ़ी में कौशल के विकास से समाज सबल एवं स्वावलंबी होगा। उन्होंने कहा कि समाज की बहन–बेटियों एवं युवा पीढ़ियों को शिक्षा के साथ–साथ कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण देना आवश्यक है, जिससे वह अपनी मूलभूत सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। उन्होंने कहा कि दैहिक, दैविक और भौतिक जैसे त्रिविध ताप को सहन कर आगे बढ़ने वाला मानव ही सफल होता है। समय एवं जीवन में अनुशासन का पालन करने वाला युवा देश और समाज के विकास की कड़ी बनता है। युवाओं को नशापान से दूर रहकर स्वस्थ शरीर निर्माण पर बल देते हुए कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन बसता है तथा स्वस्थ मन ही उत्तम प्रवृत्ति के कार्य को करने में सहयोग करता है। उन्होंने बहनों को माता दुर्गा जैसी शक्तिशाली, माता सरस्वती जैसी गुणशाली बनकर देश व राष्ट्र के विकास में प्रबल प्रेरणा के साथ निरंतर आगे बढ़ने को कहा।

इस पावन अवसर पर सुजीत उपाध्याय, सुनीता कच्छप, रामकिश्वर साहू, शिव प्रसाद साहू, कुसुम टोप्पो, अनु देवी, मनीष कुमार साहू सहित अन्य शिक्षक–शिक्षिकाएँ एवं बच्चे उपस्थित रहे।

विहिप धर्मप्रसार ने आयोजित किया निःशुल्क दंत चिकित्सा शिविर

परावर्तन के पुरोधा स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर विहिप धर्मप्रसार ने जवाहरनगर टीला नंबर 1 स्थित मुकेशनगर के तेजाजी मंदिर में निःशुल्क दंत चिकित्सा शिविर का आयोजन दंत आरोग्य सेवा संस्थान के सहयोग से आयोजित किया।

मुख्य अतिथि सीएम भार्गव ने भारत माता एवं स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन कर शिविर का शुभारंभ करते हुए विधर्मी कुचक्र विदारण महारथी स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती का जीवन परिचय देते हुए बताया कि उड़ीसा के वनवासी कंधमाल क्षेत्र के फूलबनी जिले में ईसाई मिशनरियों द्वारा धनबल व कथित सेवा के माध्यम से कराए जा रहे धर्मांतरण पर उन्होंने अंकुश लगाया।

उन्होंने जगन्नाथ यात्रा के माध्यम से तीन माह तक जन जागरण कर लाखों ईसाई बने वनवासियों का परावर्तन करवाया। इससे कुपित होकर विधर्मियों ने 2008 में जन्माष्टमी की रात्रि को उनकी हत्या कर दी।

कार्यक्रम में विहिप जिला मंत्री लालचंद, धर्मप्रसार टोली सदस्य रामखिलाड़ी मीणा, जिला धर्मप्रसार सह प्रमुख निखिल बसवाल व महेश नारानिया, महानगर समरसता प्रमुख रामप्रसाद सैनी, प्रखंड प्रमुख विष्णु साहू, जयपाल सिंह, दीपक जाट व जयपाल चौधरी सहित अनेक कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा। डॉ. अखिल करन ने अपनी कुशल टीम के साथ दंत चिकित्सा सेवा प्रदान की।

हिंदू एल्डर्स फाउंडेशन और हिंदू महिला मंच द्वारा हिंदू हेरिटेज सेंटर रोटोरुआ में आयोजित हुआ श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह

हिंदू एल्डर्स फाउंडेशन और हिंदू महिला मंच द्वारा आयोजित हिंदू हेरिटेज सेंटर रोटोरुआ का हिंदू हेरिटेज सेंटर बच्चों के रूप में रंग, संगीत और भक्ति से भर गया। बच्चे इस वर्ष आयोजित श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह के दौरान खुशी–खुशी केंद्र में रहे। शाम तक कार्यक्रम जीवंत रहा। कीर्तन (भक्ति गायन), कहानी सुनाना और बच्चों की हँसी से वातावरण बनता है।

श्रद्धा और उत्सव दोनों

यह कार्यक्रम, जो भगवान श्री कृष्ण के दिव्य जन्म का जश्न मनाता है, में बच्चे शामिल थे। कृष्ण और राधा के रूप में सजे हुए, अपनी मासूमियत, रचनात्मकता से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं। कई अभिभावकों ने आयोजकों का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके बच्चों को उनकी साँस्कृतिक परंपराओं का अनुभव करने और उनमें भाग लेने का अवसर मिलता है।

जब कृष्ण और राधा के रूप में सजे बच्चों का एक समूह मंच पर आया, तो अन्य लोग भी उत्सुकता से इसमें शामिल होने लगे। वह क्षण एक आनंददायक तात्कालिक प्रदर्शन में बदल गया। आयोजकों ने इस पर गौर किया। उत्साही प्रतिक्रिया और अगले वर्ष बच्चों की भागीदारी बढ़ाने की साँझा योजनाएँ शामिल हैं। और भी अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए एक पोशाक प्रतियोगिता शुरू की जा रही है।

"इस वर्ष का ध्यान हमारी युवा पीढ़ी को शामिल करने पर था, ताकि वे हमारे साथ जुड़ सकें। आनंदमय और सार्थक तरीके से परंपराएँ, "हिंदू एल्डर्स के अध्यक्ष विजय चंद फाउंडेशन रोटोरुआ ने कहा 'बच्चों को इतने उत्साह से भाग लेते देख मन प्रसन्न हो गया–पूरे समुदाय के लिए गर्मजोशी।' कार्यक्रम में कृष्ण के जीवन और लीलाओं पर प्रकाश डालते हुए कहानी भी शामिल थी। प्रेम, करुणा और भक्ति के मूल्य। दोनों की उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया से प्रेरणा मिली। बच्चों और वयस्कों, आयोजकों ने घोषणा की कि अगले वर्ष के समारोहों में भी इसकी सुविधा होगी। दही हांडी को प्रतीकात्मक रूप से तोड़ना – एक पारंपरिक और संवादात्मक गतिविधि है, टीम वर्क और खुशी का प्रतीक है।

हिंदू महिला मंच ने बच्चों की भागीदारी के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वेशभूषा से लेकर सहायक प्रदर्शनों तक में मदद की। हिंदू महिला की साँस्कृतिक समन्वयक नीरू वोहरा ने कहा कि 'यह एक सच्चा सामुदायिक प्रयास था।' "माता–पिता, स्वयंसेवकों और स्थानीय व्यवसाइयों सभी ने अपना समय और योगदान दिया। इस जन्माष्टमी को वास्तव में सभी के लिए विशेष और यादगार बनाते हैं। शाम का समापन साँझा शाकाहारी भोज (प्रसाद) के साथ हुआ, जिसमें परिवार एक साथ आए, मित्रों और समुदाय के सदस्यों को एकता, भक्ति और साँस्कृतिक भावना से जश्न मनाने के लिए गर्व है।

आयोजकों के बारे में हिंदू एल्डर्स फाउंडेशन – साँस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक सामुदायिक संगठन, अंतरपीढ़ीगत संबंधों को मजबूत करना और सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना। सामुदायिक जीवन में वरिष्ठजन।

हिंदू महिला मंच – महिलाओं को सशक्त बनाने, नेतृत्व को बढ़ावा देने पर केंद्रित एक मंच साँस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करना और समुदाय की सेवा करना है।

जिला बैठक का आयोजन

विश्व हिन्दू परिषद् एवं बजरंग दल झुन्झुनूं की जिला बैठक लावरेश्वर मन्दिर प्रांगण मे प्रांत मंत्री राधेश्याम के सान्निध्य, जिलाध्यक्ष विनोद सिंघानिया की अध्यक्षता तथा जिला मंत्री जयराज जांगिड के नेतृत्व में आयोजित की गईं। प्रांत मंत्री राधेश्याम जी ने विहिप केन्द्रीय बैठक के पारित प्रस्ताव के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि देश में हिन्दुओं को तोड़ने के लिए भ्रामक एवं कुण्ठित प्रयास किए जा रहे हैं। जिससे हिन्दुओं में आपस में लड़ाई झगड़ा पैदा हो। हिन्दुओं की घट रही जनसँख्या में शोक जताकर, सभी हिन्दुओं को अपनी जनसँख्या बढ़ाकर उसे संतुलन करने लिये प्रेरित किया।

उन्होंने आगामी विहिप स्थापना दिवस, अखण्ड भारत दिवस, गोपाष्टमी, गीता जयंती, धर्म रक्षा दिवस, सामाजिक समरसता दिवस एवं रामोत्सव के कार्यक्रम हर खण्ड–प्रखण्ड में करने का आग्रह किया।

bajrangdaljjn@gmail.com

अशोक सिंघल सेवा धाम वात्सल्य वाटिका बहादराबाद में आईआईटी रुड़की के लगभग 80 छात्रों का आगमन

24 अगस्त, 2025 को अशोक सिंहल सेवा धाम वात्सल्य वाटिका, बहादराबाद में आईआईटी रुड़की के लगभग 80 छात्रों का आगमन हुआ। कार्यक्रम को कुछ सत्रों में विभाजित किया गया। कार्यक्रम के प्रथम सत्र को वात्सल्य वाटिका के प्रबंधक श्री प्रदीप कुमार मिश्रा जी एवं आईआईटी कॉलेज के प्रोफेसर श्री अभिषेक जी ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन करके किया। बच्चों ने दीप स्तुति, सरस्वती वंदना एवं सामूहिक गान के माध्यम से कार्यक्रम को मूर्त रूप प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे प्रकल्प अधीक्षक श्री सुरेंद्र सिंह जी ने सभी का परिचय कराया, इसके साथ ही आईआईटी रुड़की से आए छात्रों को प्रदीप मिश्रा जी का उद्बोधन प्राप्त हुआ। उन्होंने वात्सल्य वाटिका प्रकल्प का विस्तारपूर्वक वर्णन किया।

दूसरे सत्र में वात्सल्य वाटिका के बच्चों ने अपनी ताइक्वांडो एवं योग आदि की रोमांचक प्रस्तुति दी। तृतीय सत्र में आईआईटी रुड़की के छात्रों ने प्रकल्प के छात्रावास, कंप्यूटर कक्ष, क्रीड़ा कक्षा, भोजनालय आदि का भ्रमण किया और वात्सल्य वाटिका के बच्चों के साथ वार्ता की। चतुर्थ सत्र प्रश्नोत्तरी से संबंधित रहा। इस सत्र में आईआईटी के छात्रों ने प्रकल्प तथा बच्चों के विषय में प्रबंध समिति के पदाधिकारियों के समक्ष अपने कुछ प्रश्न प्रस्तुत किए और अपनी समस्याओं के निदानात्मक उत्तर अधिकारियों से प्राप्त किये। आईआईटी के प्रोफेसर डॉ. अभिषेक जी ने प्रबंधन समिति एवं वात्सल्य का धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन अधीक्षक श्री सुरेंद्र जी ने किया। महिला प्रमुख नीता नैय्यर जी ने अपनी कविता सभी विद्यार्थियों हेतु प्रस्तुत की। अंत में आईआईटी से आए छात्र एवं वात्सल्य वाटिका के छात्रों ने फुटबाल खेलकर कार्यक्रम को समाप्त किया। इस अवसर पर समस्त वात्सल्य वाटिका स्टाफ उपस्थित रहे।

अखंड भारत संकल्प दिवस पर
पूज्य सुधा सागर जी का आशीर्वचन प्राप्त हुआ

विश्व हिंदू परिषद–बजरंग दल द्वारा अखंड भारत संकल्प दिवस कार्यक्रम पर सुभाषगंज जैन मंदिर प्रांगण में विशाल गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें पूज्य 108 सुधा सागर जी महाराज का आशीष वचन प्राप्त हुआ। महाराज जी ने कहा कि भारतीय सँस्कृति, भारतीय सभ्यता पश्चिम सभ्यता से अलग है। भारतीय सँस्कृति को अखंड बनाने के लिए पश्चिमी सभ्यता का बहिष्कार करना होगा, तभी भारत अखंड होगा। उन्होंने बहुत तार्किक रूप से बताया कि भारतीय सँस्कृति क्या है, भारतीय सँस्कृति क्यों महान है और क्यों बड़ी है? क्योंकि हम प्राणियों में सद्भावना और विश्व का कल्याण चाहने वाले हैं। मैं नहीं हम के आधार पर भारतीय सँस्कृति है।

कार्यक्रम में विहिप केंद्रीय मंत्री अरुण जी नेटके ने कहा कि भारत के जो अंग हमसे अलग हो गए हैं, आज वह संकल्प लेने का समय है कि हम उन सबको भारत में मिलाएंगे, भारत को अखंड बनाएंगे। प्रांत संगठन मंत्री सुरेंद्र सिंह जी, विभाग प्रचारक नितिन जी अग्रवाल, प्रांत अर्चक मंदिर प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा, प्रांत सत्संग प्रमुख सुरेश शर्मा, विभाग संगठन मंत्री वीर सिंह आदि ने प्रमुख रूप से महाराज जी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम के बाद वाहन रैली निकाली गई, जिसमें भारत माता और भगवान राम के चित्र की झांकी के साथ युवा दो पहिया वाहनों से निकले, जो सुभाषगंज से प्रारंभ होकर स्टेशन रोड, गाँधी पार्क, पुराना बस स्टैंड ओवर ब्रिज होते हुए नया बस स्टैंड शाशिन्द्र राणा पार्क से फुट ऑवर ब्रिज पार करते हुए गाँधी पार्क पर समापन हुआ, भारत माता की आरती की गई तत्पश्चात विहिप केंद्रीय मंत्री द्वारा सभी को अखंड भारत का संकल्प दिलाया गया।

विहिप स्थापना दिवस पर हुआ समिति सम्मेलन

गंजबासौदा/सिरोंज (म.प्र.)। स्थानीय संस्कार गार्डन में विश्व हिंदू परिषद के 61वें स्थापना दिवस पर समिति सम्मेलन कार्यक्रम आयोजित हुआ, कार्यक्रम में सिरोंज प्रखंड के अंतर्गत आने वाले सभी खंडों के पदाधिकारी–कार्यकर्ता उपस्थित रहे बैठक का शुभारंभ भगवान श्री राम जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मध्य भारत प्रांत सह मंत्री मलखान सिंह ठाकुर ने कहा कि श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन 1964 में जन्मा विश्व हिंदू परिषद 61 वर्ष का हो गया है इन 61 वर्षों के सफर में हमने अपने कार्य के आधार पर हिंदू समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। तभी तो लव जिहाद, गौ रक्षा, मठ–मंदिरों की रक्षा आदि के लिए समाज पुलिस से पहले संगठन को सूचना देता है, यह विश्वास समाज का हम पर है।

विभाग मंत्री दौलत लौंगवानी ने कार्यकर्ताओं को संगठन की रीति–नीति एवं कार्यों से अवगत कराया एवं संगठन कार्य को ईश्वरीय कार्य की तरह करने का आह्वान किया। जिला मंत्री अभिषेक शर्मा गुरूजी ने कहा की अयोध्या में भगवान राम का भव्य मंदिर बनकर तैयार हो गया है, इसके लिए संतों के मार्गदर्शन में विश्व हिंदू परिषद ने अथक परिश्रम किया है, तब जाकर हम इस पल को देख पा रहे हैं। बजरंग दल जिला संयोजक जगदीश शाक्य ने कार्यकर्ताओं को लव जिहाद जैसे विधर्मी षड्यंत्रों से निपटने के लिए तत्पर रहने का आग्रह किया।

कार्यक्रम को प्रांत सोशल मीडिया प्रमुख सत्यम दुबे, विभाग सामाजिक समरसता प्रमुख राकेश सक्सेना ने भी संबोधित किया। बैठक का संचालन प्रखंड मंत्री तुलसी नारायण शाक्य ने किया तथा आभार प्रखंड अध्यक्ष अनिल राठौड़ ने व्यक्त किया।

sharmabhishek.guruji99@gmail.com

विहिप स्थापना दिवस कार्यक्रम का आयोजन

विश्व हिन्दू परिषद् एवं बजरंग दल, झुन्झुनूँ द्वारा प्रजापति गेस्ट हाउस, जेके मोदी स्कूल के पास प्रांत परियोजना सह प्रमुख योगेन्द्र कुण्डलवाल, जिला मंत्री जयराज जांगिड के सान्निध्य, बजरंग दल जिला संयोजक सुशील प्रजापति के नेतृत्व एवं नगर अध्यक्ष अशोक सैनी की अध्यक्षता में विश्व हिन्दू परिषद् स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर जयराज जांगिड ने विश्व हिन्दू परिषद् की स्थापना एवं उद्धेश्यों पर प्रकाश डाला। योगेन्द्र कुण्डलवाल ने बताया कि विहिप की स्थापना संघ के द्वितीय सर संघचालक श्री गुरू गोलवलकर जी ने सभी धर्मो के संतों की उपस्थिति में सन् 1964 मे जन्माष्टमी के दिन की।

विहिप के द्वारा देशभर में हिन्दुओं द्वारा आयोजित कांवड यात्रा, सालासर पदयात्रा, रामदेवरा पदयात्रा, खाटूश्यामजी पदयात्रा में भाग लेने वाले सभी सनातन धर्म प्रेमियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

bajrangdaljjn@gmail.com

विहिप-बजरंग दल, गाजियाबाद ग्रामीण द्वारा डीएलएफ प्रखंड में आयोजित अखंड भारत संकल्प दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप केन्द्रीय मंत्री व अ.भा. गौरक्षा प्रमुख दिनेश उपाध्याय जी तथा कार्यक्रम में उपस्थित कार्यकर्ता

पटना दक्षिण बिहार में विहिप स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप केन्द्रीय मंत्री श्री अंबरीश सिंह जी तथा कार्यक्रम में उपस्थित प्रांतभर से पधारे विहिप प्रांतीय पदाधिकारी व कार्यकर्ता

अर्जुनधारा, जलेश्वरधाम (नेपाल) में मंदिरों के न्यासी तथा पुजारियों के सम्मेलन को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

विराटनगर (नेपाल) में परिवार प्रबोधन कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

जयपुर में परावर्तन के पुरोधा स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती जी के बलिदान दिवस पर विहिप धर्मप्रसार ने तेजाजी मंदिर में नि:शुल्क दंत चिकित्सा शिविर का आयोजन किया

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.09.2025
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

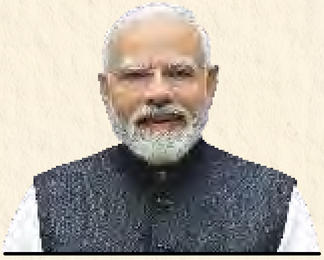

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

स्वस्थ पशुधन सम्पदा की ओर बढ़ते कदम

बीमार पशुओं के इलाज के लिए
डायल करें

हेल्प लाइन नंबर 1962

- सेक्स सॉर्टेड वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान कराएं और बछड़ी पाएं
- मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के तहत पशुओं का नि:शुल्क बीमा कराएं

कॉल करने का
समय प्रातः 7:00 से
सायंकाल 4:30 बजे तक

536 मोबाइल
पशु चिकित्सा वाहनों
के माध्यम से प्रदेश के
गरीब पशुपालकों को
घर बैठे मिल रही
नि:शुल्क पशु चिकित्सा
सेवाएं

संरक्षित पशुधन
सुरक्षित पशुधन

अपने पशुधन का
बीमा अवश्य कराएं

अधिक जानकारी के लिए नजदीकी पशु चिकित्सा संस्था में संपर्क करें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी